

October 2024

Monthly Magazine  
Year 10 Issue 10

# Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार  
*In Giving We Believe*

## सतसुग



### हमारा उद्देश्य

“हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो  
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व  
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।”

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रातः ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

# नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ  
राम राम मधुर धुन वहाँ  
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,  
जीवन में लाता सबके जो बहार  
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,  
बनाता सतयुग सा संसार  
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार  
हमारा सन.आर.सस.पी., प्यारा सन.आर.सस.पी.  
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता  
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता  
परोपकार का भाव जगाता  
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता  
सत की करता अंगीकार  
बनाता सतयुग सा संसार  
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार  
मुस्कान के राज बताता,  
तन, मन, धन से देना सिखलाता  
हमको जीना सिखलाता  
घर-घर प्रेम के दीप जलाता  
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता  
बनाता सतयुग सा संसार  
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार  
सन.आर.सस.पी.,सन.आर.सस.पी.

॥ ॐ ॥

## पावन वाणी



प्रिय नारायण प्रेमियों,

॥ नारायण नारायण ॥

नारायण शास्त्र कहता है, 'आपके जीवन में आने वाला हर व्यक्ति हमारा शुभचिंतक है'। मुझसे अक्सर लोग पूछते हैं कि दीदी शुभचिंतक तो अच्छा व्यवहार करते हैं तो फिर जो हमारे साथ नकारात्मक व्यवहार कर रहा है उसे अपना शुभचिंतक कैसे मानें? मेरे ख्याल से यह बहुत आसान है, जब कोई व्यक्ति आपके साथ नकारात्मक व्यवहार कर रहा है और आप नारायण शास्त्र का यह सूत्र याद रखते हैं कि 'वह मेरे कर्मों को हल्का कर रहा है' तो मन उसके प्रति करुणा, ममता और आदर से भरने लगता है। चित्त शांत और सकारात्मक रहता है। परन्तु मान लीजिए आप पूरी कोशिशों के बावजूद यह नहीं कर पा रहे हैं तो खुद को सदभावना से भरें। स्वयं के लिए प्रार्थनाएँ करें कि आप सद्भावना से ओतप्रोत हैं और सबके साथ सदभावना यानी दया, ममता, करुणा, सम्मान से भरा व्यवहार कर रहे हैं। ऐसा तब तक करें जब तक आपकी प्रत्येक कोशिका सदभावना से न भर जाये।

आपको कब पता चलेगा कि आप सदभावना से ओतप्रोत हो गए हैं?

जब आपके जीवन में आने वाला हर व्यक्ति आपको प्रेम से भरपूर अपना ही अंश लगने लगे, जब हर व्यक्ति के प्रति आपके मन में सिर्फ प्यार, आदर और सम्मान हो, जब हर प्राणी के प्रति आपके मन में करुणा हो ऐसा अवश्य होगा यह मेरा प्रबल विश्वास है।

शरीर की हर कोशिका को सदभावना से भरें और हर किसी को अपना शुभचिंतक मानें, यह मेरी कामना और इच्छा है।

शेष कुशल -

R. Modi

॥नारायण नारायण॥

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन

टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड, गोरेगांव ( प. ), मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुला अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाडिया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनु गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली ( नोएडा )	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली ( नोएडा )	मेधा गुप्ता	9968696600
दिल्ली ( डब्ल्यू )	रेनु बिज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहला केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुजुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोल्हापुर	स्वेता केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतडा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मोरबी	कल्पना चोरीडिया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगाव	ममता सिंगोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरविंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सुरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सोमली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर ( राजस्थान )	सुष्मा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा सुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झंवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिधानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660
गुडगांव	मेधा गुप्ता	9968696600
यवतमाल	वंदना सूचक	932521889
अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम		
ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

## संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

पिछले दिनों एक पुराने परिचित से मिलना हुआ। बच्चों ने उनके बारे में जानकारी चाही तो पतिदेव ने कहा, 'यूँ समझ लो बेटा, यह हमारे शुभचिंतक हैं'। परन्तु पापा हम तो इनसे पहली बार मिल रहे हैं तो यह हमारे शुभचिंतक कैसे हो गए? पतिदेव ने मन्द मुस्कान के साथ बताया, 'बेटा यह अंकल अब अमेरिका में रहते हैं, पर इन्होंने हमेशा हमारा भला ही चाहा है। जब मैं मुंबई में अकेला हॉस्टल में रहता था तब कभी तबीयत खराब होती तो मैं इनके ही पास जाता था। यह अंकल-आंटी ही मेरी देखभाल करते थे। शादी के बाद जब तुम्हारी माँ यहाँ आई तो मुंबई की दुनिया से इन आंटी ने ही तुम्हारी माँ का परिचय कराया। हमारे हर सुख, दुःख में यह हमेशा हमारे साथ रहे, हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया और सदैव हमारे हितैषी रहे। आज भले ही देश-विदेश की दूरियाँ हैं पर दिल अभी भी नज़दीक हैं। आज तुम इन्हें पहली बार देख रहे हो क्योंकि यह वर्षों बाद देश लौटे हैं। पर हमारे बारे में उन्हें सब ज्ञात है और समय-समय पर वो मुझे और तुम्हारी माँ को सलाह, आशीर्वाद और दुआएं देते रहते हैं'।

इतना कह कर पतिदेव तो दूसरी बात करने लगे किन्तु अनजाने में ही उन्होंने मेरे ज़हन में एक नया विषय दे दिया, 'शुभचिंतक'।

हम शुभचिंतक बन सबके जीवन को खुशियों से भरते रहें, इन्ही शुभकामनाओं सहित -

आपकी अपनी  
संध्या गुप्ता

## अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल  
ऑस्ट्रेलिया  
बैकॉक  
कनाडा  
दुबई  
शारजाह  
जकार्ता  
लन्दन  
सिंगापुर  
डबलिनओहियो  
अमेरिका

रिचा केडिया 977985-1132261  
रंजना मोदी 61470045681  
गायत्री अग्रवाल 66897604198  
पूजा आनंद 14168547020  
विमला पोद्दार 971528371106  
शिल्पा मंजरे 971501752655  
अपेक्षा जोगनी 9324889800  
सी.ए. अक्षता अग्रवाल 447828015548  
पूजा गुप्ता 6591454445  
स्नेह नारायण अग्रवाल 1-614-787-3341

## अमेरिका

सिंसिनाती	मेधा अग्रवाल	+1(516)312-4189
कनेक्टिकट	ऊष्मा जोशी	
फ्लोरिडा	बीना पटेल	+1(904)343-9056
शिकागो	चाँदनी ठक्कर	+12247700252
केलिफोर्निया	सुशीला तयाल	+12247700252
न्यू जर्सी	शैली अग्रवाल	+912012842586

we are on net



narayanreikisatsangparivar



@narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार  
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.  
Call : 022-67847777

॥ नारायण नारायण ॥





प्रकृति गीता में राज दीदी बताती हैं कि- हमारे जीवन में आने वाला हर व्यक्ति हमारा शुभचिंतक है क्योंकि जाने अनजाने हर एक व्यक्ति हमारे कार्मिक अकाउंट को संतुलित करने में हमारी मदद करता है। शुभचिंतक का अर्थ है वे लोग जो सच्चे दिल से आपकी भलाई की कामना करते हैं और आपके जीवन में सकारात्मकता लाने का प्रयास करते हैं। असली शुभचिंतक वे होते हैं जो हर परिस्थिति में आपका साथ देते हैं, आपकी क्षमताओं पर विश्वास करते हैं और आपको प्रेरित करते हैं। ऐसे लोग आपकी खुशियों से ईर्ष्या नहीं करते बल्कि आपकी सफलता में आनंद महसूस करते हैं। शुभचिंतकों की पहचान इस बात से होती है कि वे आपकी छोटी-बड़ी सफलताओं की सराहना करते हैं और नकारात्मक विचारों से आपको दूर रखते हैं।

आप अपने जीवन में शुभचिंतक बनने के लिए खुद में सकारात्मकता का विकास करें, दूसरों की भलाई की कामना करें, और उन्हें सच्चे दिल से प्रेरित करें। किसी के अच्छे गुणों की प्रशंसा करना और उनकी क्षमताओं को प्रोत्साहित करना एक शुभचिंतक की निशानी है। शुभचिंतक बनने का प्रयास करते समय ध्यान रखें कि आपको ईमानदारी से, बिना किसी स्वार्थ के, दूसरों की मदद करनी चाहिए।

शुभचिंतक हमारे जीवन की ताकत और हमारी खुशियों के आधार के अलावा और कुछ नहीं हैं।

जो व्यक्ति अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति अपनी शुभकामनाएं या सहानुभूति व्यक्त करते हैं जिन्हें वे नहीं जानते, उन्हें शुभचिंतक के रूप में जाना जाता है। शुभचिंतक और कुछ नहीं बल्कि विचारों में बुद्धि, नैतिकता, वफादारी और कानूनी विशेषताओं का एक व्यक्तित्व है।

सच्चा शुभचिंतक वही है जो आपके सामने आपकी कमज़ोरियों के बारे में बात करता है और दूसरों के सामने गर्व से आपकी ताकत के बारे में बात करता है।

जो लोग हमारे शुभचिंतक हैं अगर वे किसी वजह से गुस्सा हो जाते हैं तो उन्हें तुरंत मना लेना चाहिए।

**‘रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाए। दूटे से फिर न जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाए ॥’**

शुभचिंतकों का गुस्सा तुरंत शांत कर लेंगे तो बात ज़्यादा बिगड़ेगी नहीं। शुभचिंतक वह व्यक्ति होता है, जो हर समय आपकी भलाई चाहता है।

जो कोई भी आपसे गहरा प्यार करता है, आपकी परवाह करता है, आपकी भलाई के बारे में सोचता है वह आपका शुभचिंतक है।

माता-पिता ही हमारे सच्चे हितैषी हैं। वे सभी पहलुओं में केवल हमारा सर्वश्रेष्ठ ही चाहते हैं। उनका प्यार, चिंता और देखभाल हमारी कल्पना से परे है।

माता-पिता के अलावा आपके और भी शुभचिंतक होते हैं। आपके दोस्त, भाई-बहन, शिक्षक या आपके गुरु आपके शुभचिंतक हो सकते हैं। उनका प्यार और चिंता आपको उनके आसपास सहज महसूस कराती है।

आप बेझिझक उनसे बात कर सकते हैं या अपने मन की बात उनके साथ साझा कर सकते हैं। वे हमेशा आपका मार्गदर्शन करेंगे कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है।

कोई छिपा हुआ स्वार्थ नहीं, कोई ईर्ष्या नहीं, कोई और मकसद नहीं है। वे जो सारा प्यार और देखभाल आप पर बरसाते हैं, वह निःस्वार्थ, शुद्ध प्रेम से आता है। शुभचिंतक व्यक्ति दयालु, शांतिपूर्ण, सच्चा, समदर्शी, दोषरहित, उदार, सौम्य, स्वच्छ, अपरिग्रही शुभचिंतक होता है। सभी संतुष्ट कृष्ण के प्रति समर्पित, लालसा रहित, सरल, स्थिर, संयमी, संतुलित भोजन करने वाला, समझदार, शिष्टाचारी, अभिमान रहित, गंभीर, सहानुभूतिपूर्ण, मिलनसार, काव्यात्मक, विशेषज्ञ और मौन होते हैं। शुभचिंतक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कई तरीकों से उनकी भलाई में योगदान करते हैं और भावनात्मक समर्थन देते हैं।

सचमुच वे लोग धन्य हैं, जिनके पास कोई उनका शुभचिंतक है। देखभाल और चिंता व्यक्त करते हुए शुभचिंतक भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं, जो व्यक्तियों को मूल्यवान, प्यार और समझे जाने का एहसास कराता है।

शुभचिंतक द्वारा प्रोत्साहन के शब्द लोगों को चुनौतियों से उबरने और अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित करते हैं। आत्मविश्वास बढ़ने से उन्हें दृढ़निश्चयी बने रहने में मदद मिलती है। जो व्यक्ति सच्चे दिल से आपके अच्छे होने की कामना करते हैं, तनाव और चिंता को कम कर सकते हैं। यह सुरक्षा और अपनेपन की भावना पैदा करते हैं, जो जीवन के उतार-चढ़ाव से निपटने में मदद करता है।

शुभचिंतक के होने से खुशी बढ़ती है और अकेलापन कम होता है। आपको अच्छा महसूस होता है कि ऐसे लोग हैं जो आपकी खुशी और सफलता की परवाह करते हैं।

जब सामाजिक दायरे की बात आती है, तो शुभचिंतक हमेशा मौजूद रहते हैं। ये संबंध अलगाव से निपटने और अधिक संतुष्टिदायक जीवन जीने में मदद करते हैं।

उपलब्धियां तब और भी खास हो जाती हैं जब कोई और भी आपको उनके लिए बधाई दे रहा हो। इससे आपके आत्म-सम्मान और आत्म-मूल्य में वृद्धि होती है।

शुभचिंतक समुदाय और समर्थन जाल-तंत्र में पाए जा सकते हैं। यह अच्छा माहौल बनाते हैं, कठिन समय से गुजरना आसान बनता है और आपके जीवन को बेहतर बनाते हैं।

दूसरों को अपना शुभचिंतक बनाना एक कला है, जिसमें धैर्य, समझ, और निष्ठा की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसा कौशल है जिसे सीखकर आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता और संतुष्टि प्राप्त कर सकते हैं। जब लोग आपके प्रति सकारात्मक भाव रखते हैं, तो आपके जीवन में कई अवसरों और सहयोग के द्वार खुलते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण कदम हैं, जो आपको दूसरों को अपना शुभचिंतक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं :-

o ईमानदारी और विश्वास बनाए रखें

o सच्चाई से बात करें

जब आप ईमानदारी से बात करते हैं, तो लोग आपके प्रति विश्वास रखते हैं। अपने विचारों और भावनाओं

को सही ढंग से प्रस्तुत करें।

० वचन निभाएं

यदि आप किसी से कुछ वादा करते हैं, तो उसे पूरा करने का हर संभव प्रयास करें। इससे लोग आपको एक भरोसेमंद व्यक्ति के रूप में देखते हैं।

० सहानुभूति और समझ का प्रदर्शन करें

० दूसरों की बात सुनें

जब आप किसी से बातचीत कर रहे होते हैं, तो उनकी बातों को ध्यान से सुनें और उन्हें समझने की कोशिश करें। इससे उन्हें लगेगा कि आप उनकी परवाह करते हैं।

० उनकी स्थिति समझें

उनकी स्थिति, भावनाओं और विचारों को समझने का प्रयास करें। सहानुभूति दिखाने से लोग आपके प्रति सकारात्मक रुख अपनाते हैं।

० विनम्रता और आदर का भाव रखें

० सम्मानपूर्वक व्यवहार करें

लोगों को सम्मान देने से वे आपके प्रति आकर्षित होते हैं। किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव न करें और उन्हें आदरपूर्वक सम्मान दें।

० कृतज्ञता प्रकट करें

जब भी कोई आपकी सहायता करे या आपके लिए कुछ अच्छा करे, तो उनका धन्यवाद करें। इससे वे आपके प्रति शुभचिंतक बने रहते हैं।

० सकारात्मकता बनाए रखें

० मुस्कान का जादू

एक छोटी सी मुस्कान बहुत कुछ बदल सकती है। मुस्कराते हुए चेहरे से सकारात्मकता का संदेश जाता है, जिससे लोग आपकी ओर आकर्षित होते हैं।

० प्रोत्साहित करें

जब लोग आपके आस-पास हों तो उनकी सफलता और उपलब्धियों पर उन्हें प्रोत्साहित करें। इससे वे आपके प्रति और भी सकारात्मक भाव रखेंगे।

० मदद के लिए हमेशा तैयार रहें सहायता का हाथ बढ़ाएं

यदि आप किसी की सहायता कर सकते हैं, तो उसे करने से पीछे न हटें। दूसरों की मदद करने से लोग आपको एक सहायक व्यक्ति के रूप में देखते हैं।

#### o समर्थन दें

लोगों को अपने लक्ष्यों और सपनों को पूरा करने में समर्थन दें। इससे उन्हें लगेगा कि आप उनकी भलाई चाहते हैं।

#### o आलोचना के प्रति संतुलित प्रतिक्रिया दें

#### o सकारात्मक प्रतिक्रिया दें

यदि आपको किसी की आलोचना करनी है, तो सकारात्मक और रचनात्मक तरीके से करें ताकि सामने वाले को ठेस न पहुंचे।

#### o स्वयं भी आलोचना को स्वीकारें

यदि कोई आपकी आलोचना करता है, तो उसे खुले मन से स्वीकारें और अपने सुधार का प्रयास करें।

#### o अच्छे कार्यों को साझा करें और प्रेरणा दें

अपने अच्छे कार्यों से लोगों को प्रेरित करें। दूसरों के सामने अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करने से वे आपको आदर्श मानने लगते हैं।

#### o साझा करने की भावना रखें

जब भी संभव हो, दूसरों के साथ अपने संसाधन और ज्ञान साझा करें। इससे आपके प्रति उनके विचार सकारात्मक होते हैं।

#### o लोगों के हितों का ध्यान रखें उनकी आवश्यकताओं को समझें

जब आप किसी के हितों और ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं, तो वे आपके प्रति विशेष स्नेह महसूस करते हैं।

#### o सहयोग करें

जब भी किसी को आपकी सहायता की आवश्यकता हो, तो उनकी ज़रूरत का ध्यान रखते हुए उनकी मदद करें।

दूसरों को अपना शुभचिंतक बनाना समय और निरंतरता की मांग करता है। इन कदमों का अनुसरण करके आप अपने आस-पास एक सकारात्मक वातावरण बना सकते हैं। याद रखें कि हर संबंध में परस्पर सम्मान, सहानुभूति और ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। जब लोग आपके प्रति सच्चे दिल से सकारात्मक भाव रखते हैं, तो न केवल वे आपके शुभचिंतक बनते हैं, बल्कि आपके जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह भी लाते हैं।



ज्ञान मँजूषा के इस स्तंभ में हम सत्संग के खज़ाने से कुछ मोती पाठकों के लिए लेकर आते हैं। इस बार यह मोती तन, मन, धन, की समृद्धि को बढ़ाने के लिए हैं। आप इन्हें पढ़ें और समझें और जीवन को समृद्धि से लबालब कर लें:-

राज दीदी कहती हैं कि धन के लिए हमें हमेशा सकारात्मक एवं उचित शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। धन के लिए हम जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, धन हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करता है। हमारे घर में बरकत और बढ़ोतरी हो रही है। यदि आप इन शब्दों का इस्तेमाल करेंगे तो अवश्य ही आपके धन में बरकत, बढ़ोतरी, प्रचुरता होगी। राज दीदी ने कहा कि खर्च शब्द का इस्तेमाल करने की बजाय हमें इन्वेस्टमेंट या निवेश जैसे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा करने से हमें कुछ न कुछ प्रतिफल में ज़रूर मिलता है।

राज दीदी ने आगे कहा कि आप दैनिक कार्यकलापों में जिस किसी को भी पैसा देते हैं, चाहे उससे मोलभाव करने के बाद देते हों फिर भी फाइनल अमाउंट देने के बाद उस व्यक्ति को 2, 5 या 10 रूपए अतिरिक्त दे दीजिए। उसे यह कह कर दीजिए कि यह आपके गल्ले में रखिएगा, नारायण आपको बरकत देंगे। किसी को भी पेमेंट करते वक्त 10 का नोट भी रिटर्न में मिले तो उस नोट की कदर कीजिए और मुस्कुराते हुए लिजिए। उस 10 रूपए के नोट में इतनी ताकत है कि वह आपके पास 10 करोड़ रूपए खींच कर ला सकता है। रिक्शे वाले का मीटर यदि 46 रूपए हुआ है और आपने उसे 50 का नोट दिया तो रिटर्न में मिलने वाले चार रूपए के सिक्कों का इस तरीके से स्वागत कीजिए जैसे आप सोने की गिन्नियों का करते हैं। आप अपने घर में जिस भी स्थान पर धन को रखते हैं जैसे- पर्स, बैग, अलमारी, लॉकर इन सभी चीज़ों का नियमित रूप से धन्यवाद करें। जब भी पैसा निकालते हैं या रखते हैं तो यह कहिए कि मैं जब भी यहां पर पैसा रखती हूँ या निकालती हूँ तो मुझे धन में बरकत, बढ़ोतरी प्रचुरता होती है। किसी को भी पैसा देते वक्त मुस्कुरा कर दीजिए, ज़रा भी मुंह बनाकर मत दीजिए। आप यदि किसी को मुंह बनाकर पैसा देते हैं तो आपकी नेगेटिव तरंगें उन पैसों के साथ चली जाती हैं और वह नोट लौट कर आपके पास जल्दी नहीं आता है। उदाहरणार्थ यदि आपके घर में आए हुए मेहमान के साथ आप उचित व्यवहार नहीं करते हो तो क्या वह आपके घर वापस आएगा? यही सूत्र पैसों पर भी लागू होता है।

राज दीदी ने आगे कहा कि धन और मन का घनिष्ठ संबंध है। आज तक सभी की मानसिकता यह थी कि धन है तो मन खुश है लेकिन नारायण शास्त्र यह दावे के साथ कहता है कि मन खुश हो तो धन अवश्य आएगा ही। खुश मन धन को आकर्षित करता है। मन खुश रखना आपके हाथों में है। आपका मन जितना खुश होगा उतना ही धन आपको बरकत देगा। एक विशेष सूचना - क्रोध की अवस्था में धन को कभी भी हाथ नहीं लगाना चाहिए और यदि आपको आपातकाल में हाथ लगाना पड़ भी जाए तो मन ही मन राम राम एक, राम राम दो का निरंतर जाप करते जाइए। ऐसा करने से आपके भीतर का नेगेटिव भाव पैसों तक नहीं पहुंचेगा। आप यदि किसी के साथ यात्रा कर रहे हैं और किराया शेयर करना हो तो आप यह सोचकर पैसा नहीं देते हैं कि सामने वाला दे देगा। वहां 500, 1000 बचाने के चक्कर में न जाने आपको कितने हज़ार खर्च करने पड़ जाएंगे। वैसे ही यदि सामने वाले के देने तक आपने भी पैसा बाहर निकाल लिया लेकिन आपसे पहले उसने पेमेंट कर दिया तो उसका प्रभाव आप पर नहीं पड़ता है क्योंकि आपकी नीयत अच्छी थी। धन की हमें कदर करनी चाहिए। जितनी कदर हम अपने धन की करते हैं उतनी ही कदर हमें दूसरों के धन की भी करनी चाहिए क्योंकि घर में हमें सुख, शांति सेहत, समृद्धि लानी है। नारायण नारायण नारायण नारायण।



राज दीदी ने आगे कहा कि श्री अल कोरन नामक एक बहुत पहुंचे हुए लेखक हैं जिन्होंने उनकी पुस्तक 'How to Attract Money' में लिखा है कि हम धन को आकर्षित कैसे करें। बहुत सुंदर तकनीक है और यह आजमाई हुई भी है और यह कार्य भी करती है। आप किसी को भी धन देते हैं तो मन ही मन यह बोल कर दीजिए, 'नारायण नारायण..!! आइ लव यू, आइ लाइक यू, आइ रिस्पेक्ट यू, आप जिनके यहां भी जा रहे हो उसको बरकत देना, उसका काम अच्छे से करके मेरे पास मल्टीप्ल होकर आ जाना'। राज दीदी ने आगे कहा कि हमारे जीवन को सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरने की यह बहुत ही सुंदर तकनीक है। आपके घर में जितने भी लोग हैं सभी इकट्ठे बैठकर सामूहिक प्रार्थना कीजिए। एक साथ बैठकर सवामणी करनी है। राम राम 108 + राम राम 21

राज दीदी ने आगे कहा कि नारायण शास्त्र कहता है जो फल आपको राजसूय यज्ञ से मिलता है और अश्वमेध यज्ञ से मिलता है वही फल आपको सामूहिक प्रार्थना के माध्यम से भी मिलता है।

#### सामूहिक प्रार्थना :-

यदि आप सामूहिक यज्ञ करना चाहते हैं और आपके घर के सदस्य उपलब्ध नहीं हैं तो आप अपने गुरुदेव की फोटो को सामने रखकर भी सामूहिक प्रार्थना शुरू कर सकते हैं। एक दिन ऐसा होगा कि आपके परिवार के सभी सदस्य आपके साथ बैठकर सामूहिक प्रार्थना करने लगेंगे।

हमारे जीवन में लक्ष्मी जी का हाथ हो, मां सरस्वती जी का साथ हो, गणेश जी का निवास हो और नारायण का आशीर्वाद हो!! हम सभी के जीवन में प्रकाश ही प्रकाश हो, प्रकाश ही प्रकाश हो, प्रकाश ही प्रकाश हो!

#### तिजोरी ध्यान साधना :-

राज दीदी ने आगे कहा कि आप जहां भी अपने रूपए पैसे रखते हैं, चाहे पर्स में, तिजोरी में या किसी अलमारी के ड्रावर में, वह जगह नए करारे नोटों से लबालब भरी हुई है। आप कल्पना करिए कि 500रु., 200रु., 100रु., 50रु., 20रु., 10रु. और 5रु. के नोटों से आपका ड्रावर भरा हुआ है और एक प्याले में बहुत से coins भी रखे हुए हैं। आपको उस ड्रावर को रोज़ प्रत्यक्ष में छूकर या इमेजिनेशन में बात करनी है कि आप मेरे लिए बहुत शुभ हैं, बहुत भाग्यशाली हैं, आपकी वजह से मैं सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरा हुआ जीवन जी रही हूँ। I Love You, I Like You, I Respect You. आप अपने ड्रावर में रखे हुए पैसों से बात कर रहे हैं और आप उनसे कहेंगे कि आप जहां पर भी जाएंगे उनके घर पर बहुत सुख, शांति, सेहत, समृद्ध, बरकत देना, बढ़ोतरी देना और उसका काम अच्छे से करके आप सपरिवार मेरे पास मल्टीप्ल, मल्टीप्ल, मल्टीप्ल होकर आ जाइये। प्रेम से आपको यह कन्वर्सेशन रोज़

करना है और उसके बाद आपको राम-राम 56 से उसको पॉजिटिव एनर्जी से भर देना है। राज दीदी ने सबके नोटों और सिक्कों से खचाखच भरे हुए drawer को सामूहिक तौर पर एनर्जाइज करवाया।

#### डाइनिंग टेबल एनर्जाइज करना :-

राज दीदी ने फिर हमारे रसोई घर को, डाइनिंग टेबल को, खाद्य पदार्थों को और हम जहां हमारे अनाज को स्टोर करते हैं उन सभी जगहों को यह कहते हुए एनर्जाइज करवाया कि हम सभी अपने खाद्य पदार्थों को ऊर्जा से और संजीवनी से परिपूर्ण करते हैं कि हमारे खाद्य पदार्थों में बरकत हो, बढ़ोतरी हो और प्रचुरता हो। साथ ही

साथ हम जो खाद्य पदार्थ खा रहे हैं वह हमारे तन और मन को एकदम स्वस्थ करें भी और रखें भी। राज दीदी ने कहा अगर आपके पास समय सीमित हो तो आप धन को और खाद्य पदार्थों को एक साथ एनर्जाइज कर सकते हैं। लेफ्ट हैंड आपके तिजोरी को और राइट हैंड आपके खाद्य पदार्थ को एनर्जाइज करेगा।

#### **सूर्य किरण ध्यान साधना :-**

राज दीदी ने आगे सूर्य प्रकाश ध्यान साधना करवाई जिससे हम सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से, प्रचुरता से भरा जीवन जी रहे हैं। फिर राम-राम 21 का जाप करवाया। राज दीदी ने आगे कहा कि अपने घर को सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, Love, Respect, Faith, Care, उन्नति, प्रगति, सफलता, खुशी, आनंद, उत्साह से भरा हुआ महसूस कीजिए और नारायण को असीम धन्यवाद ज्ञापित कीजिए।

#### **कार्मिक हीलिंग :-**

राज दीदी ने आगे कार्मिक हीलिंग के बारे में बताया। इसमें कुछ परिवर्तन किया है। कार्मिक हीलिंग करते वक्त अपने परिवार के सदस्यों की फोटो को हाथ में ले लीजिए या उन सभी को अपने लेफ्ट हैंड साइड में विजुलाइज कर लीजिए। लेफ्ट हैंड की ऊर्जा आप उन्हें भेजिए। जिन लोगों को हमने अपने नेगेटिव विचार, व्यवहार, वाणी से hurt किया है, उनसे हम क्षमा मांगते हैं और साथ ही साथ जिनके नेगेटिव विचार, व्यवहार और वाणी के माध्यम से हम hurt हुए हैं, उन्हें हम माफ भी करते हैं। जिससे भी हम hurt हुए हैं और जिन्हें भी हमने hurt किया है उन सभी का जीवन सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता, good Name, Fame, Money, Love, Respect, Faith, Care से प्रचुरता से भर दीजिए, यह भाव आपके लेफ्ट हैंड से होना चाहिए। हमारे राइट हैंड का यह भाव होना चाहिए कि 'हे नारायण - जिनकी वजह से आज हम सुख भोग रहे हैं, जिनकी वजह से कल सुख भोगा था और जिनकी वजह से आने वाले कल में सुख भोगेंगे उन सभी का जीवन सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता, खुशी, आनंद, उत्साह, लव, रिस्पेक्ट, फेथ, केयर और दिव्य ऊर्जा से भर दीजिए और आशीर्वाद देते समय चेहरे पर मीठी, मधुर मुस्कान के साथ हमारा राम-राम 21 का 7 बार जाप होगा।'

#### **संजीवनी हीलिंग :-**

राज दीदी ने आगे संजीवनी हीलिंग के बारे में बताया। राज दीदी ने कहा कि आप सामूहिक तौर पर कितने ही लोगों की एक साथ हीलिंग कर सकते हैं। इसमें हमें विशेष ध्यान रखना होगा कि हम एक जगह बैठकर ही चाइल्ड सिस्टम में हीलिंग करें, चलते फिरते ना करें। आपकी गोद में आप कोई भी विशेष व्यक्ति को विजुलाइज कर सकते हैं जिन्हें आप संजीवनी एनर्जी भेजना चाहते हैं, स्वस्थ होते देखना चाहते हैं। लाइन से आप 500 - 1000 लोगों को संजीवनी blessings दे रहे हैं। यह आप कल्पना कर सकते हैं कि यह सभी व्यक्ति तन से स्वस्थ हैं और मन से स्वस्थ हैं। राज दीदी ने चाइल्ड सिस्टम में सभी चक्रों को संबोधित करते हुए संजीवनी हीलिंग की राम-राम 21 की पांच माला करवाई। राज दीदी ने आगे कहा कि नारायण का धन्यवाद कीजिए कि आपको माध्यम बनाया इतने लोगों को स्वस्थ करने के लिए और रखने के लिए।

राज दीदी ने आगे कहा कि अब हम अपने आप से एक कमिटमेंट करते हैं कि हम NRSP के नियमों का पालन पूरी ईमानदारी और निष्ठा से करेंगे और फिर राम-राम 21 का जाप करवाया।

### जीवन के चार पहिए

राज दीदी ने नारायण प्रार्थना से इस सत्र की शुरुआत की। Mr. राम रत्नम की वाणी को Mr. राघव के माध्यम से बताते हुए कहा, Mr. राघव लिखते हैं कि हमारे जीवन की चार प्राथमिकताएं हैं, हम सभी चाहते हैं कि हम तन, मन, धन, संबंधों से स्वस्थ हों। यह हमारे जीवन रूपी गाड़ी के चार पहिए हैं, जब यह चारों स्वस्थ रहते हैं तो हमारी जीवन रूपी गाड़ी जीवन पथ पर सरपट दौड़ती है।

### दो प्रकार की ऊर्जा :-

Mr. राघव आगे लिखते हैं, इस ब्रह्मांड में दो प्रकार की ऊर्जा निहित है - पॉजिटिव और नेगेटिव। सुख, शांति, सेहत और समृद्धि यह सब पॉजिटिव एनर्जी का रूप है, जो हम हमारे जीवन में चाहते हैं। दुःख, दरिद्रता, अशांति, रोग, शोक, पतन, तकलीफें, परेशानियां यह सब हम हमारे जीवन में नहीं चाहते, यह सभी नकारात्मक ऊर्जा के रूप में इस ब्रह्मांड में उपस्थित है।

शब्दों का सही उपयोग राघव कहते हैं कि हमें बचपन से ही सिखाया जाता है कि हमें क्या बोलना है, कैसे बोलना है और कब बोलना है। जो चीज हमें नहीं बोलनी चाहिए और यदि हम वह मज़ाक में भी बोल देते हैं, सहज ही बोल देते हैं, गंभीर होकर भी बोल देते हैं तो भी वह शब्द अपना असर दिखाता है। ऐसा करने से अनजाने में हम नकारात्मक ऊर्जा को अपनी ओर अट्रैक्ट कर लेते हैं और जो हमारा आजीवन स्वस्थ रहने का पैकेज है वह अस्वस्थ हो जाता है।

### क्या बोलने से बचें ?

1. अक्सर हम यह कह देते हैं कि 'मेरी तो कोई सुनता ही नहीं है'। राघव कहते हैं कि यह शब्द बोलना तो दूर, हमें बुदबुदाना भी नहीं चाहिए और ना ही यह भीतर ही भीतर बोलना चाहिए। यह तो वो बात हो गई कि आपने तो पहले ही डिक्लेयर कर दिया कि मेरी कौन सुनता है, तो फिर आपकी कौन सुनेगा? यह पूरा सेंटेंस नेगेटिविटी से परिपूर्ण है जो आपके भीतर हर्ट उत्पन्न करता है। हर्ट आपके पास नेगेटिविटी को ही अट्रैक्ट करता है और अनजाने, अनचाहे ही आप इस नेगेटिव ऊर्जा के संपर्क में आ जाते हैं और आपका अच्छा पैकेज अस्वस्थ हो जाता है। फिर आपके मन में यह भाव आता है कि सब कुछ अच्छा अच्छा करने के बावजूद भी मेरा पैकेज अस्वस्थ क्यों है.? आपको सब कुछ स्वस्थ चाहिए तो आपको अपना नेगेटिव सेंटेंस बदलना होगा। नारायण शास्त्र के मंत्र की तरह आपको पॉजिटिव स्टेटमेंट देना होगा। 'नारायण आपके आशीर्वाद से घर का हर एक सदस्य मेरी बात सुनता भी है और मानता भी है, नारायण आपका धन्यवाद है।' जिस प्रकार आप गायत्री मंत्र भीतर ही भीतर दोहराते हैं, वैसे ही यह पॉजिटिव स्टेटमेंट को आपको बारंबार दोहराना है। दिन भर में कम से कम 200 बार इसका उच्चारण हो जाना चाहिए। आप जिस तक अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं, पहले आपको यह देखना होगा कि सामने वाला व्यक्ति आपकी बात सुनने के मूड में है क्या, कई बार ऐसा होता है कि सामने वाला व्यक्ति पहले ही तनावग्रस्त होता है। ऐसे में आप जाकर अपनी बात कह देते हैं तो आपकी बात उस तक पहुंच नहीं पाती। पहले आपको यह देखना होगा, फिर उसके बाद शांति से आपको अपनी बात कहनी होगी। फिर अपने जीवन में आप चमत्कार देखिएगा कि कैसे सामने वाला व्यक्ति आपकी बात सुनता भी है और मानता भी है।

**2. यह जीवन बहुत मुश्किल है, यह काम बहुत मुश्किल है,** ऐसा आपको कभी नहीं कहना है। जैसे ही अपने मुश्किल शब्द का इस्तेमाल किया वैसे ही नेगेटिविटी को आपने आकर्षित कर लिया, तकलीफों और परेशानियों से आप घिर जाते हैं। हमें अपना जीवन सुंदर और सुरक्षित चाहिए, तो बारंबार कहिये यह जीवन बहुत सुंदर है, सुरक्षित है। बारंबार आप ऐसा कहेंगे तो आपका जीवन सुंदर होता चला जाएगा। हो सकता है कि थोड़ा समय लग जाए, आपको हल्का सा पेशेंस रखना होगा। ब्रह्मांड का नियम यह है कि यहां गुल्लक का, पिग्गी बैंक का सिस्टम चलता है। अभी तक आप कहते थे कि जीवन बहुत मुश्किल है तो आपका वह नेगेटिव वाला स्टॉक चल रहा है, हाल ही में आपने यह कहना शुरू किया है कि जीवन सुंदर है। वह नेगेटिव स्टॉक खत्म होने के बाद जो पहले अपने चिल्लर डाली थी उसके बाद आपने अभी जो पॉज़िटिविटी के करारे नोट डाले हैं, वह आने शुरू होंगे। पॉज़िटिव एफर्मेशन देने के बाद में आप यह महसूस करेंगे कि वाकई में आपका जीवन सुंदर होता चला जा रहा है। जैसे ही किसी काम को देखकर आप कहते हैं यह काम बहुत मुश्किल है, वह वहीं पर थम जाता है। आपको यह कहना है कि यह काम बहुत आसान है। जैसे ही आपने यह कहना शुरू किया तो प्रकृति आपके लिए स्वयं ही आसान रास्ते खोल देगी।

**3. 'कोई भी काम करने का मेरा मन नहीं है'**। राघव लिखते हैं कि इन शब्दों का आप बिल्कुल भी इस्तेमाल ना करें यदि आप ऐसा कहेंगे कि मेरा मन नहीं है तो वह शब्द आपके भीतर अपना भाव बना लेंगे और आपको कुछ भी काम करने नहीं देंगे। दिखने में सूक्ष्म सा विचार है, छोटा सा विचार है लेकिन बहुत गहरा असर डालता है। यह असर खास समय पर आता है, जब आप अच्छा काम करने बैठते हो तो नहीं कर पाते हो। फॉर एग्जांपल मेडिटेशन करने बैठे तो आज आपका मन नहीं हुआ और आपने छोड़ दिया। एक्सरसाइज करने बैठे और फिर नहीं किया क्योंकि आज आपका मूड नहीं है करने का। एक्सरसाइज के बेनिफिट्स को आप रिपीट करना शुरू कर दीजिए - एक्सरसाइज करने से मैं फिट रहूंगी, मेरा स्टेमिना बढ़ेगा, मेरी फिटनेस बढ़ेगी, मेरी फुर्ती बढ़ेगी, यह मुझे करना है अपने आप को फिट रखने के लिए। बारंबार आप एक्सरसाइज के फायदे रिपीट करना शुरू कर देंगे तो नेगेटिव ऊर्जा आपकी लाइफ से चली जाएगी और आपके जीवन में चमत्कार होने शुरू हो जाएंगे।

**4. 'हमेशा' और 'कभी नहीं'।** यह दोनों अपने भीतर ढेर सारी ऊर्जा समेटे हुए हैं। इनको आप जिस रूप में इस्तेमाल करते हैं वह उस रूप में ढल जाते हैं। फॉर एग्जांपल आपने यह कहा, इनका तो हमेशा से ऐसा स्वभाव रहा है कि दूसरों की केयर करना, यह कभी भी किसी की बुराई नहीं करते हैं। आपने इन शब्दों को पॉज़िटिव रूप में इस्तेमाल किया है, इसकी पॉज़िटिव ऊर्जा सामने वाले तक पहुंच जाएगी, इसका ज़बरदस्त असर उसके ऊपर होगा। लोग अधिकतर इन शब्दों का इस्तेमाल नकारात्मक रूप में करते हैं। फॉर एग्जांपल इनका तो हमेशा से स्वभाव रहा है देरी से आने का, यह कभी नहीं सुधर सकता, यह हमेशा से ऐसा ही था। इन शब्दों का हम नकारात्मक रूप में इस्तेमाल करते हैं तो अगर सामने वाले में बदलाव आता भी है तो हमें दिखाई नहीं देता। आपका इंटेंशन यह है कि ऐसा बोलकर हम सामने वाले को सुधार लेंगे लेकिन यह संभव नहीं है, इसका इस्तेमाल हमेशा पॉज़िटिव रूप में ही करें और फिर अपने जीवन में चमत्कार देखें।

राघव ने आगे बहुत ही सुंदर बात लिखी, हमें अपने मन के संतुलन के लिए और अपने व्यवहार के संतुलन के लिए शब्दों पर निर्भर रहना पड़ता है, तो क्यों ना हम हमेशा सही और उचित शब्द चुनें ताकि हमारा मन और व्यवहार संतुलित रहे और हम लगातार पॉज़िटिव ज़ोन में रहकर पॉज़िटिव ऊर्जा के ही संपर्क में रहें और हमेशा पॉज़िटिविटी को ही आकर्षित करें।



## युवा मंच

॥ ५ ॥

सद्भावना अर्थात् सत् भावना, वह भाव जो अच्छाई से परिपूर्ण हों, प्रेम और विश्वास बढ़ाने वाले हों।

ऐसा कोई बटन नहीं है जिसे आप दबायें और यह जन्म ले ले।

इसको पालने पोसने के लिए सर्वप्रथम प्राणीमात्र में प्रेम का भाव होना अनिवार्य है।

जब हम हर व्यक्ति में नारायण का रूप देखेंगे अर्थात् यह समझ जाएँगे कि उसके अंदर जो प्राण संचार हो रहे हैं वो उसी ईश्वर की ऊर्जा है जिससे यह संपूर्ण जगत संचालित होता है।

जिसके लिए ना कोई छोटा है, ना बड़ा, ना कोई जाति, ना भाषा, ना क्षेत्र की सीमा, वही सद्भावना को सही मायनों में पोषित कर सकता है। अपने रिश्तेदार हों या दोस्त सभी के साथ समभाव से व्यवहार करना। अगर हमारा व्यवहार ऐसा होगा तो सद्भावना रूपी पौधे को सही खाद पानी मिलेगा। ऐसा करने से न कोई आपका प्रिय होगा न अप्रिय। आप सभी को समान प्यार-आदर-सम्मान देंगे। आपकी वाणी और व्यवहार में तारतम्य होना ज़रूरी है। अगर आप कहते कुछ हैं, और करते कुछ और हैं तो फिर सद्भावना कभी नहीं पनप सकती। आपने यह शब्द अपने बड़ों से अवश्य सुनें होंगे -

‘कथनी और करनी समान होनी चाहिए’

अर्थात् जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से समान हो वही पवित्र है और वही सही मायनों में सद्भावना का प्रतीक है।

हम अपने रिश्तों में कितने ईमानदार और वफ़ादार हैं उस पर भी सद्भावना का पनपना निर्भर करता है। हमारे अंदर सभी जीवों के प्रति करुणा व सहानुभूति का भाव कितना प्रबल है, यह सद्भावना को पोषित करता है।

दुर्भावना और सद्भावना ऐसे ही हैं जैसे दिन और रात। जब आप अपने अंदर की सभी दुर्भावनाओं से मुक्त हो जाएँगे तो सद्भावना स्वतः ही बढ़ जाएगी। जब सद्भावना बढ़ेगी तभी सही मायनों में युवा सार्थक व सप्त सितारा जीवन का हकदार बन पायेगा।

आइये हम सभी प्रण लें कि हम सद्भावना को पोषित करेंगे और अपने से जुड़े हर व्यक्ति को भी इसकी महत्ता का परिचय देंगे।

**अयोध्या मालवानी को सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता और उत्तम स्वास्थ्य से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।**

**सुषमा तायड़िया और बनवारी लाल तायड़िया को विवाह वर्षगांठ (३० नवंबर) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता और उत्तम स्वास्थ्य से भरे सप्तसितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।**

॥नारायण नारायण॥





प्यारे बच्चों, आओ हम सब मिल कर एक ऐसी दुनिया का निर्माण करें जहाँ हर व्यक्ति दूसरे को अपना शुभचिंतक मानता हो। सभी रिश्तों में प्यार, सम्मान, विश्वास, देखभाल की अभिव्यक्ति हो। यहाँ एक-दूसरे के प्रति और एक-दूसरे के प्रति वफादारी, नैतिकता, ईमानदारी और भरोसा हो। यह सब संभव है जब हम सद्भावना से भरे हों।

सद्भावना आदर्श है! यह समर्थन और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा देती हैं, जिससे सभी के लिए आगे बढ़ना आसान हो जाता है। चाहे वह एक मुस्कान हो, मदद करने वाला हाथ हो या सच्ची तारीफ हो, हर छोटा-मोटा काम मायने रखता है और सामूहिक भलाई में योगदान देता है।

सतयुग टीम का यह अंक सद्भावना के लाभों और सद्भावना को हमारे जीवन को स्वस्थ बनाने के लिए हमारे ऊपर पड़ने वाले प्रभाव को विस्तार से बताने पर काम कर रहा है।

सद्भावना को कैसे बढ़ाया जाए?

इसके लिए हमें समझना होगा कि

सद्भावना क्या है?

सद्भावना की परिभाषा इस प्रकार दी गई है:- सद्भावना दूसरे लोगों, देशों या संगठनों के प्रति एक दोस्ताना या मददगार रवैया है।

जब हम सभी की मदद करने और सभी की बात सुनने का अपना रवैया बनाए रखते हैं, तो वे भी अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

उत्तर भारत के एक परिवार की एक सुंदर कहानी पढ़ें। एक लड़की के माता-पिता दोनों ही काम करते थे। एक दिन आग लगने से उनका सब कुछ नष्ट हो गया। उन्होंने व उस परिसर में रहने वाले ५० अन्य परिवारों ने अपना घर और सामान खो दिया। उन्हें सरकारी आश्रय गृह में ले जाया गया। लड़की के माता-पिता इस बात से हताश थे कि उन्होंने जो कुछ भी मूल्यवान समझा था, जो कुछ भी उन्होंने अपनी बेटी की शादी के लिए जमा किया था, वह सब राख में मिल गया।

लेकिन उसके पिता अभी भी एक बहादुर व्यक्ति थे। वे ईश्वरीय ऊर्जा में विश्वास करते थे। जब आप सब कुछ खो देते हैं, तब आपका असली चरित्र सामने आता है।

सच्चा चरित्र हीरे की तरह होता है, जो कोयले की खदान में छिपा होता है।

पिता अगले ही दिन सिख मंदिर गए और फिर अपने कार्यस्थल पर गए।

पिता के सरल विश्वास ने उसे ताकत दी। उन्होंने सब कुछ खो दिया था, लेकिन फिर भी अपने जीवन को फिर से व्यवस्थित करने की इच्छाशक्ति थी।

उन्हें पहले भी शून्य से शुरुआत करनी पड़ी थी - सटीक रूप से कहें तो आपको बस तीन चीजों की आवश्यकता है, उन्होंने कहा, 'इच्छा (कुछ करने की), सद्भावना (साथी मनुष्यों की) और ईश्वर की इच्छा।'

उनकी सद्भावना के कारण, उनके सहकर्मियों ने उन्हें अपना व्यवसाय फिर से शुरू करने में मदद की, जो फला-फूला।

लड़की की माँ भी स्कूल वापस चली गईं। वहाँ भी उन्हें मदद मिली और हाँ, वे भी बच गईं।

तो जैसा कि एनआरएसपी और राजदीदी भविष्यवाणी करती हैं, हमेशा यह मानिए कि आपके साथ जुड़ा हर व्यक्ति आपका शुभचिंतक है।



## दीदी के छाँव तले

॥ ५ ॥

पिछले लंबे समय से इस स्तंभ में हम उन सत्संगियों के कन्फेशन पाठकों, तक पहुंचते हैं जिन्होंने ब्रह्म मुहूर्त में कन्फेशन किया दीदी के सुझाये सुझावों पर चले और सप्त सितारा जीवन प्राप्त किया। हमरा उद्देश्य एक ही है पाठक इसे पढ़ें, समझें और अपनी गलतियों को सुधारें:-

### पुरुष सतसंगी का कन्फेशन

मैं अपने वैवाहिक जीवन में संतुलन नहीं बना पाया, अपनी पत्नी और बच्चों को उनके हक का समय और आदर सम्मान नहीं दे पाया। हमेशा अपने और अपने माँ बाप की इच्छाओं को ऊपर रखा, इसके चलते तीन साल से मुझे अपने बीवी बच्चों से अलग रहना पड़ रहा है, कृपया मुझे नारायण भवन में क्षमा दिलवाएं।

### सम्पत्ति पर गर्व किया

मुझे अपनी संपत्ति पर और पति पर बहुत गर्व हो गया था। मेरे पति ने दूसरे भाई की प्रॉपर्टी पर कब्जा कर लिया और उस पर कारखाना और दुकान बना कर किराए पर चढ़ा दिया, उससे ४० हजार रूपए आ रहे थे। मेरे पति नारायण धाम चले गए, संपत्ति भी बिक गयी। हमने दूसरे के हक का खाया तो आज चारों ओर से संपत्ति रुकी हुई है। मुझे क्षमा दिलवाएं।

घमंड किया, विचार, वाणी, व्यवहार से सबको हर्ट किया।

### पुरुष सतसंगी का कन्फेशन

**मैंने मेरी पहली पत्नी को बहुत हर्ट किया।** उसकी एक गलती को मेरे और उसके परिवार में सबके सामने ला कर उसे इतनी ज्यादा खरी खोटी सुनाई कि उसने अपना नारायण नारायण कर लिया। उसके मरने के बाद, सबको यह झूठ कहा कि वह आनंद प्रद स्तिथि में थी। परिणाम - मेरी दूसरी पत्नी की स्तिथि आनंद प्रद हो गयी, मैं उसे ले कर एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर, पीर, पंडित, मौलवी, के पास जाता रहता और दिखाता रहता हूँ। मेरी पर्सनल लाइफ डिस्टर्बड ही रही। जब मुझे अपने पिता जी के अनैतिक सम्बन्ध के बारे में पता चला तब उनके ऊपर हाथ भी उठाया, फैंक्ट्री में वर्कर गलती करते तो उनको मारता था। अपने साले को भी बहुत मारा है। परिणाम - मुझे राइट साइड में फ्रोज़न शोल्डर हो गया है और बहुत दर्द होता है। लड़ झगड़ कर प्रॉपर्टी का शेयर हासिल किया, परिणाम - पैसा टिका नहीं, बरकत बढ़ोतरी नहीं हुई। कोई गलती करता था तो जब तक वह मेरे पैर पकड़ कर माफ़ी नहीं मांगता था, मैं उसे माफ़ नहीं करता था। बहुत लोगो के साथ अपनी वाणी से दुर्व्यवहार किया। फैंक्ट्री में चोरी का माल खरीदता था, नतीजा यह हुआ कि फैंक्ट्री में चोरी होने लगी। बिज़नेस में किसी ने गलती से ज्यादा पैसे दे दिए तो खुद रख लेता था, बताता नहीं था। परिणाम - कोई बरकत नहीं हुई, लायबिलिटीज बढ़ती गयी। गाड़ी, बंगला सब बिक गया। जब समय अच्छा था तब नारायण की कृपा मानने की बजाय घमंड किया। ६ महीने से आपसे जुड़ा, शेयरिंग सुन सुन कर अपने आप को सुधार रहा हूँ। आज मैं ६० वर्ष का हूँ और अपनी सभी गलतियों का एहसास अब हुआ है। मैं नारायण भवन में क्षमा चाहता हूँ।

### चोरी, चर्चा के परिणाम

किसी की अंगूठी गिर गई थी तो उनको लौटाने की बजाय मैंने वह अंगूठी अपने पास रख ली। परिणाम - मेरी सोने की चैन जो कि चार गुना ज़्यादा महंगी थी, और पांच हज़ार रुपया कैश चोरी हो गया।

मेरे बच्चे पढ़ने में बहुत होशियार थे, उसकी चर्चा करती थी कि मेरे बच्चे तो बहुत अच्छे से पढ़ते हैं और जेठानी, देवरानी के बच्चे किसी काम के नहीं हैं। परिणाम - अब मेरी देवरानी और जेठानी के बच्चे बहुत अच्छा कर रहे हैं और मेरे बच्चे नारायण हेल्प हैं।

मेरे मायके से सब लोग आते जाते थे, देवरानी और जेठानी के नहीं आते थे। बहुत चर्चा करती थी, घमंड करती थी। परिणाम- अब मेरे पीहर से कोई नहीं आता है।

### ग़लत विचारों का परिणाम

१५ साल पहले मेरे ससुर जी को दमे की बिमारी थी, उनको कफ आता था वो एक मग ले कर बैठते थे, तो मन में विचार आया था। अब मुझे भी दमे की बिमारी हो गयी है। मैं क्षमा चाहती हूँ।

### सद्भावना का परिणाम

पुरुष सत्संगी ने बताया कल इतने सालों में पहली बार पूरे दिन गुस्सा नहीं किया और मीठा बोला, धीमा बोला। कल एक पार्टी का आर्डर था, उनकी गलती से कोई गलत फहमी हो गयी थी उन्होंने मुझे बहुत सुनाया, पर मैंने उन्हें पलट कर जवाब नहीं दिया और उन्हें प्रेम से समझाया। मिलने वालों ने भी कहा की मुझमें बहुत अच्छे बदलाव आ रहे है। दीदी आपको सादर नमन, मुझे सही राह दिखाने के लिए।



॥ नारायण नारायण ॥

आज का विचार

यदि कोई व्यक्ति आपको ताने मार रहा है आपसे ऊँची आवाज में बात कर रहा है, आप शांत रह कर, मौन रह कर उसे नारायण bless him/ bless her करते हैं तो आप एक तो सकारात्मक ऊर्जा से ओत प्रोत रहेंगे और ज्यादा शांति और खुशी महसूस करेंगे और आप जीवन में सुख शांति सेहत समृद्धि को आकर्षित करेंगे।

- राज दीदी



### अनजान शुभचिंतक

एक छोटी लड़की अपने छोटे से घर के फर्श पर बैठी रो रही थी। इतना सब कुछ सहने के बाद, यह पहली बार था जब उसे अकेलापन महसूस हुआ। छोटी अमारा ने बहुत ही कम उम्र में अपने माता-पिता दोनों को खो दिया था और उसकी बड़ी बहन ही उसके लिए सबकुछ थी। वे एक साथ सभी कठिनाइयों से गुज़रे और हर समय एक-दूसरे के साथ रहे। बहुत गरीब होने के बावजूद भी वे एक-दूसरे को खुश रखने में कामयाब रहे। अमारा की बहन ने उसे कभी अपने माता-पिता की कमी महसूस नहीं होने दी। लेकिन अब भयानक कोरोना वायरस ने उसकी बहन को भी अपनी चपेट में ले लिया है। अब वह अकेले कैसे रहेगी, जब उसके साथ कोई नहीं है?

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। अमारा ने पहले तो इसका उत्तर देने की जहमत नहीं उठाई। लेकिन जब उसने दोबारा दस्तक सुनी तो उठ गई, आंखें पोंछी और दरवाज़ा खोला। उसके सामने एक आदमी खड़ा था। वह न बहुत लंबा था, न बहुत छोटा, न ज्यादा मोटा, न ज्यादा पतला, उसके चेहरे पर एक दयालु मुस्कान थी। छोटी लड़की को देखकर उसकी मुस्कान चौड़ी हो गई।

‘हैलो! मैं एक यात्री हूँ। मेरी बस छूट गई, इसलिए एक आदमी ने मुझसे कहा कि मुझे पास में कोई दूसरा परिवहन मिल जाएगा। लेकिन मुझे विश्वास है कि मैं खो गया हूँ। मैं घंटों से भटक रहा हूँ और बहुत थका हुआ और भूखा हूँ। क्या आप कृपया मुझे कुछ खाने को दे सकते हैं?’ आदमी ने कहा।

अमारा की बहन ने उसे हमेशा लोगों की मदद करना सिखाया था, चाहे स्थिति कैसी भी हो। इसलिए अमारा ने उस आदमी को अंदर जाने दिया और उसे खाने के लिए हर छोटी चीज़ दी। उस आदमी ने यह देखा, और पूछा ‘छोटी मिस, यदि आप मुझे सब कुछ देने जा रही हैं। तो फिर आप क्या खायेंगी?’

‘मुझे भूख नहीं है’ अमारा ने उदास होकर कहा। उस आदमी को पता था कि कुछ चीज़ छोटी लड़की को परेशान कर रही है, इसलिए उसने उससे पूछा कि क्या परेशानी है? अभी अमारा सिर्फ एक छोटी लड़की थी और वह सिर्फ अपना दर्द किसी के साथ साझा करना चाहती थी। इसलिए जब उस आदमी ने उससे पूछा, तो वह फूट-फूट कर रोने लगी और उस आदमी को सब कुछ बता दिया। उस आदमी ने उसका दर्द समझा और उसके पास जाकर उसे गले लगा लिया। वह आदमी अमारा के लिए बिल्कुल अजनबी था, लेकिन आलिंगन अभी भी आरामदायक लग रहा था। वे थोड़ी देर तक वैसे ही रुके रहे, जब अमारा ने कहा, ‘अब मैं कैसे रहूंगी? मेरी बहन ही थी जो पैसे के लिए काम करती थी और हमारी प्लेटों में खाना लाती थी। मुझे नहीं पता कि यह कैसे करना है।’

‘अब... मैं आपके पास हूँ। मैं आपको तब तक कुछ पैसे दूंगा जब तक आपको नौकरी नहीं मिल जाती और आप पर्याप्त रूप से स्थिर नहीं हो जाते। मुझे लगता है कि जब तक आप बेहतर महसूस नहीं करतीं, मैं आपकी देखभाल के लिए यहां कुछ और दिन रुकूंगा। अगर यह आपके साथ ठीक है’ आदमी ने कहा। ‘बेशक, यह बहुत अच्छा होगा’ अमारा ने उत्तर दिया।

कुछ दिन बीत गए... उसका ध्यान भटकाने के लिए, उस आदमी ने कुछ किताबें खरीदीं और अमारा को घर पर ही पढ़ाना शुरू कर दिया। वह एक चतुर लड़की थी, बस साधनों की कमी थी। वह अब भी कभी-कभी अपनी बहन के लिए रोती थी, लेकिन उस आदमी ने उससे कहा कि यह पूरी तरह से सामान्य है, और समय इस घाव को भी ठीक कर देगा। इस बीच, उस आदमी के बटुए में पैसे खत्म हो रहे थे। और जल्द ही उनके पास कुछ भी नहीं बचेगा। इसलिए उसने अमारा के लिए नौकरी ढूँढना शुरू कर दिया।

एक दिन उसने नाश्ते के दौरान अमारा से कहा, 'मैंने तुम्हारे लिए एक नौकरी ढूँढ ली है अमारा, अब तुम खुद पैसे कमा सकती हो, जैसे तुम्हारी बहन ने किया था, तुम कल से शुरू करोगी'। नन्हीं अमारा खुश हुई, 'ओह! यह अद्भुत है! अब मैं खुद पैसा कमा सकती हूँ!' लेकिन उसने उस आदमी की आवाज़ में उदासी नहीं देखी थी। वह जानता था कि वह आगे जो करने जा रहा है, उससे उसे गहरी चोट पहुंचेगी, लेकिन उसके पास और कोई विकल्प नहीं था।

'शुभ रात्रि अमारा' आदमी ने कहा।

'शुभ रात्रि!' अमारा ने कहा। इसके साथ ही दोनों को गहरी नींद आ गयी। अगली सुबह जब अमारा उठी तो उसने देखा कि वह आदमी बिस्तर पर या घर में नहीं है। उसका सामान भी कहीं नज़र नहीं आ रहा था। वह घर से बाहर भागी, इधर-उधर ढूँढा, लेकिन वह उसे कहीं नहीं मिला। उसने दूसरे आदमी से पूछा तो 'वह सुबह जल्दी ६ बजे की बस से चला गया।' उस आदमी ने उत्तर दिया। अमारा भावनाओं से भर गई। वह दुःखी हो गयी क्योंकि अब फिर से उसके पास कोई नहीं था और क्रोधित भी क्योंकि उसने उसे नहीं बताया था कि वह जा रहा है। वह दौड़कर अपने घर पहुंची और रोने लगी।

तभी उसने उसके बिस्तर पर एक नोट देखा, किसी कारण से वह इसे पहले भूल गई थी। अब अमारा पढ़ना सीख गई थी इसलिए उसने नोट को ज़ोर से पढ़ा :-

**प्रिय अमारा,**

मैं जानता हूँ आप मुझसे नाराज होंगी। लेकिन मैं आपको अपनी योजनाओं के बारे में नहीं बता सका, नहीं तो तुम मुझे कभी जाने नहीं देती। मैं आपको बता दूँ कि यह मेरे लिए भी बहुत कठिन निर्णय था। लेकिन जैसा कि मैंने आपको बताया कि मैं एक यात्री हूँ और एक यात्री एक जगह पर ज्यादा देर तक नहीं रुकता। मैंने तुम्हारे लिए गाँव में एक ट्यूशन टीचर की व्यवस्था कर दी है, वह मुफ्त में पढ़ाने के लिए तैयार हो गई है और रोज़ शाम ५ बजे तुम्हारे घर आएगी। कृपया, मुझसे वादा करें कि आप कभी भी पढ़ाई बंद नहीं करेंगी और बड़ी होकर एक बहुत बड़ी और बुद्धिमान महिला बनेंगी। फिर आप अपने जैसे अन्य बच्चों की भी मदद कर सकती हैं या ज्योतिष में कोई बड़ी खोज करें... कृपया, आपको इस तरह छोड़ने के लिए मुझे क्षमा करें, लेकिन ऐसे कई अन्य बच्चे भी हैं जिन्हें मेरी मदद की ज़रूरत है। और याद है? तुमने एक दिन मुझसे मेरा नाम पूछा और मैंने उत्तर दिया कि मेरा कोई नाम नहीं है। खैर, मैंने तो बस अपने आप को एक नाम दिया है।

मुझे शुभचिंतक समझो।



## शुभचिंतक की सलाह

मैं और मेरा दोस्त हर सुबह स्कूल के लिए एक ही बस लेते थे। चूंकि हमारा घर शहर के विकासशील हिस्से में था, इसलिए बस सेवाएं अनियमित और अव्यवस्थित थीं। हम अपने विनम्र बस चालक के आभारी थे क्योंकि जिस सुबह हम देर से चल रहे होते थे तो वह हमारा इंतज़ार करता था। यहां तक कि जब हम बस पकड़ने के लिए ब्रैम्बल्स के ऊपर से गुज़र रहे एक खाली भूखंड को पार करते थे तो उनकी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान और 'सावधान' हमें यह एहसास दिलाती थी कि कोई बड़ा भाई अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल कर रहा है। जल्द ही हम अपने ग्रेड से आगे निकल गए, अपनी वर्दी से आगे निकल गए। खाली ज़मीन गायब हो गई और घर उग आए, फिर भी बस सेवा वही रही। आवृत्ति भले ही बढ़ गई हो, लेकिन यह वही बस थी और वही ड्राइवर था जो हमें हर दिन स्कूल ले जाता था।

हमने देखा कि यह ड्राइवर अन्य ड्राइवरों और कंडक्टरों की तुलना में अलग था। वह साफ-सुथरी प्रेस की हुई वर्दी पहनते थे और चप्पलों की जगह स्पोर्ट्स जूते पहनते थे। इसके अलावा, वह मृदुभाषी थे और वे खड़े यात्रियों से रास्ता देने का विनम्र अनुरोध भी जब तब किया करते थे। हैदराबाद के कुख्यात छेड़खानी करने वालों से निपटने का उनका तरीका भी बहुत तथ्यपूर्ण था और आमतौर पर किसी भी तर्क की गुंजाइश नहीं थी।

धीरे-धीरे, उस बस ड्राइवर ने हमारी कक्षाओं और ग्रेडों के बारे में पूछताछ करना शुरू कर दिया। हमने अपने अंक बढ़ा-चढ़ाकर बताए ! परीक्षा के दौरान, हमने न केवल सुबह बस पकड़ी बल्कि उसकी शिफ्ट खत्म होने से पहले अपनी वापसी यात्रा भी तय की। हमारे शैक्षणिक प्रदर्शन में उनकी रुचि एक नवीनता थी, यह देखते हुए कि हम अपने आप को कॉन्वेंट शिक्षित लोग मानते थे और सोचते थे कि कम पढ़े-लिखे लोग ही बस ड्राइवर और कंडक्टर बनते हैं। हम स्कूली बच्चों द्वारा इसे एक निम्न पेशा माना जाता था, जो ड्राइवरों की शिफ्ट, भीषण मौसम और तेज यात्रियों से निपटने की कठिनाई से चूक जाते थे।

आखिरकार, वह दिन आ ही गया जब हम अपने स्कूली जीवन के अंतिम वर्ष में थे। दसवीं कक्षा को एक मील का पत्थर माना जाता था और हमें हर तरफ से इसकी याद दिलाई जाती थी। १०वीं के बाद हम इंटरमीडिएट कॉलेज में दाखिल हुए।

हम किसी के जीवन के सबसे यातनापूर्ण दौर से काफी हद तक दूर हो गए थे। हम साथ-साथ चलते हुए काफी खुश थे और इसके अलावा जब हम सिर्फ पंद्रह साल के थे तो सलाह हमारी पीठ से उतर गई।

यह हमारे फाइनल के करीब था। हम स्कूल से अपनी तैयारी के अंक लेने गए थे और पड़ोस की बस में वापस आ रहे थे तभी ड्राइवर ने हमसे हमारा प्रदर्शन पूछा। हम हतप्रभ थे, हमारे परिणाम साझा करने के लिए बहुत अच्छे नहीं थे-भले ही वह ड्राइवर ही क्यों न हो ! उन्होंने मुस्कराते हुए बेबाक अंग्रेजी में कहा, 'मेरे पिता और भाई दोनों मैनेजर हैं। मैंने दसवीं बोर्ड में नकल करने की कोशिश की और उड़न दस्ते ने मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया। मुझे छह साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया और अब मैं एक बस ड्राइवर हूँ। कभी भी धोखा न दें बल्कि अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करें।' इससे पहले कि हम अपने विचार एकत्र कर सकें, उन्होंने आगे कहा, 'अवसरों का दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए!' हमें काफी शर्मिंदा होना पड़ा।

## माता पिता सच्चे शुभचिंतक

**ये मेरी पहली नौकरी नहीं थी।** इससे पहले मैं छोटे मोटे एन.जी.ओ में प्रोजेक्ट्स के ऑपरेशन्स हैंडल करती थी, जिससे मेरी कॉलेज की काफी ज़रूरतें पूरी होती थीं। मगर मेरी माँ के लिए ये मेरी पहली नौकरी इसलिए थी कि ये एक जानी मानी स्थापित कंपनी थी। और माँ ने ही ज़बरदस्ती मुझसे इसका फॉर्म भरवाया था। जिस दिन इंटरव्यू था उसकी एक रात पहले माँ ने पास बुला कर कहा ' सुन, अगर कभी कोई तुम्हें नीचे करने की कोशिश करे तो समझ लेना ये इशारा है ऊपर वाले का कि तुम्हें उससे कहीं ऊंचा पहुंचना है।' अगले दिन माँ की तबियत बिगड़ गयी। उनको हॉस्पिटल में भर्ती किया गया। मगर परिवार में किसी ने मुझे वहां रुकने तक नहीं दिया। माँ की ख़्वाहिश थी कि मैं कहीं अच्छी जगह स्थिर नौकरी पा जाऊँ। इंटरव्यू देने जाऊँ। नौकरी तो मिल गयी मगर माँ हमेशा के लिए खो गयी। मैं गहरी उदासी में जा चुकी थी। मगर किसी को भी ये अहसास नहीं हुआ, मुझे भी नहीं।

कम्पनी में भी उसी विभाग में मेरी नियुक्ति हुई जिसमें मैं एक तरह से काफी सालों से काम करती आ रही थी। मन धीरे धीरे रमने लगा था। सब कुछ अच्छा था मगर एक खालीपन सा घर कर गया था। ऑफिस में काफी उत्साही लोग भी थे। उनकी एक मंडली थी जिसमें हर दम कुछ रौनक सी रहती थी। उनके शोर शराबे से मेरा ध्यान कभी कभी उस ओर जाता। और तब मंडली में एक नजर अक्सर मुझे मेरी तरफ देखती नजर आती। ये विधि थी। अनुभवी, हंसमुख और थोड़ी गुस्से बाज।

एक दिन कम्पनी के डायरेक्टर निरीक्षण को आये। ये अचानक ही हुआ था। मेरा काम सारा निपटा हुआ था। कोई बैकलोग नहीं था। विधि उस दिन किसी वजह से लेट थी। उसकी टीम मेम्बर शिखा मेरे पास भागी आई। ' सर को किसी बहाने अपने पास रोक लेना प्लीज, विधि नहीं आई और उसकी प्रोजेक्ट फ़ाइल भी नहीं दिख रही।' मैंने कहा 'ओके, कोशिश करूंगी।'

उस दिन विधि पूरे डेढ़ घण्टे लेट थी। शायद उसकी किस्मत बुलंद थी या मेरी, डायरेक्टर सर काफी देर तक मेरी फ़ाइल और प्रोजेक्ट में रुचि लेते रहे और मुझे कहा ' यू आर एन एसेट टू दिस कम्पनी।' बहरहाल दोपहर तक वे चले गये। लंच आवर हुआ, विधि को शिखा ने बताया कि आज वो मेरी वजह से बची है। सो वह कैंटीन में मेरे पास आई और बहुत शालीनता से मेरा शुक्रिया किया। मुझे उसकी शालीनता ने एक दम से मानो चौंका दिया। उसकी आँखें चमक रही थीं और चेहरे पर मुस्कान थी। मैंने भी कहा 'ईट्स ओके, मेशन नौट।'

इसके बाद विधि से रोज ' हाय-बाय ' होने लगा। एक दिन पता चला कि विधि और उसकी टीम को मेरे डिपार्टमेंट में शिफ्ट कर दिया गया है। विधि और मैं अब आमने सामने बैठते थे। मुझे काम पूरा करने का जुनून रहता मगर विधि को मेरा ऐसे डूब कर काम करना फ़िज़ूल लगता था।

एक दिन वो मेरी डेस्क पर आई और हँसते हुए बोली 'क्या फायदा होता है तुम्हें, उल्टा और काम तुम पर लाद देते हैं। उतना ही किया करो मैडम, जितनी तन्खाह मिलती है।' मैंने उसकी बात पर मुस्करा दिया। ' ओके जी, झेलना फिर, हम तो चले मैडम।' कह कर वह ये जा, वो जा।

कुछ दिन बाद माँ की बरसी पर, कैंटीन में बैठी मैं अपने टिफिन को देखे जा रही थी। ये टिफिन वही था जिसमें माँ मुझे लंच पैक करके दिया करती थी। पता ही नहीं चला कि कब मेरी आँखों से आँसू की धार बह चली थी। कुर्सी खींचने

की आवाज़ ने मेरा ध्यान हटाया। देखा सामने विधि बैठी है। 'क्या हुआ मैडम ?' उसने बस पूछा भर और मेरी सिसकियां भर आईं। वो मुझे सुन ने लगी। मैं उसे कह रही थी 'ये नौकरी, मुझे समझ नहीं आता की इसे क्या समझूं? इसको पाने चली थी माँ खो बैठी।' 'तुम खुद कह रही हो कि ये माँ की इच्छा थी तो इसे माँ का आशीर्वाद मानो।' ऐसा नहीं था कि ये आज विधि ने ही पहली बार ऐसा मुझे समझाया था। परिवार में हर कोई मुझे इसी तरह कहता आया था। मगर विधि के सीधे संवाद ने असर किया। मैं थोड़ा मुक्त हुई अपनी उदासी से। थोड़ा हल्का सा लगने लगा। अब वो अक्सर बात करती। मैं भी वापस सामान्य होने लगी।

जब कभी ऑफिस पोलिटिक्स से परेशान होती तो वो मोरल हाई करती, बताती कि ये सब नॉर्मल है। ऐसा होता है। अपने लिए खड़े होना सीखो वगैरह वगैरह। कभी कभी उसे कोई सहयोग चाहिये होता तो मैं बिना कहे कर देती। इसी तरह चलता रहा। एक भरोसा सा कायम होने लगा। अब हम हर प्रोजेक्ट को साथ करते। वो अपने एक्सपीरियंस बताती और मैं सुनती और सुधार सजेस्ट करती और वो उनको अमल में लाती। ऐसे कई शानदार प्रोजेक्ट उसके चले। वो कहती कि मैं उसकी बेस्ट कलीग से ज्यादा अच्छी दोस्त हूँ। मुझे भी लगने लगा कि इस ऑफिस में मेरी एक शुभचिंतक है।

साल बीत गया। फाउंडेशन डे पर कॉन्फरेंस हाल में सबकी मीटिंग बुलायी गयी। विधि लीव पर थी। डायरेक्टर सर ने एक बड़े नेशनल प्रोजेक्ट के लिए मेरा नाम लिया और कहा कि अपनी टीम को सलेक्ट करके नाम दो। सब हैरान थे कि इसे आये अभी साल ही हुआ और इतनी बड़ी जिम्मेदारी इसे दे रहे। मैं भी घबरा सी गयी। विधि इस प्रोजेक्ट के लिए उपयुक्त थी। मैंने बिना कुछ सोचे उसका नाम प्रोपोस किया। मगर डायरेक्टर सर ने कहा कि हमें फ्रेश और रॉ टैलेंट की जरूरत है। उसके टैलेंट को किसी और प्रोजेक्ट में कंसीडर करेंगे। मुझे निराशा हुई साथ ही मैं बहुत नर्वस भी हुई कि अगर प्रोजेक्ट सही से नहीं रन हो पाया तो क्या होगा। अगले दो दिन भी विधि नहीं आई। मैंने हाल चाल के लिए फोन किया। वो दोस्तों के साथ कहीं लम्बी रोड ट्रिप पर निकली हुई थी। मैंने उसे प्रोजेक्ट की पूरी बात बताई। 'खूबसूरत होने का यही तो फायदा है मैडम!!!!' विधि बोली 'सुना है उस दिन तुम्हारे डायरेक्टर सर एक डेढ़ घन्टा तुम्हारे साथ ही बैठे थे। मैं सुन कर आवाक थी। ये विधि ही बोल रही है या कोई और। 'ऐनी वे, जवानी जब तक काम आये, गुड लक हीरोईन' कह कर उसने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया। मगर मुझे अब भी दो विधि दिखायी दे रही थी। एक मुझे प्यार से कंसोल करती हुई और दूसरी कानों में पिघला शीशा डालती हुई। ये दूसरी कौन थी ?!

ऑफिस में भी सुगबुगाहटें थीं। और ये ज़रा भी अलग नहीं थी। विधि के कहे शब्द अलग अलग आवाज़ों में मेरे कानों में पड़ रहे थे। बहुत बेचैनी होने लगी कि लोग इस तरह की घिनौनी बातें क्यों कर रहे हैं?!!!

मैं घर आकर खुद को समझाने लगी, खुद से बातें करने लगी 'उन सबको पता है खासतौर पर विधि को कि मैं पहले भी इस तरह के प्रोजेक्ट कर चुकी हूँ। ये बस थोड़ा स्टेट से निकल कर नेशनल लैवल का हो गया है।'

बड़ी देर खुद से बहस करती रही। लोग मेरे बारे में अनाप शनाप बोल रहे हैं सिर्फ इस प्रोजेक्ट की वजह से न? ! फिर सोच लिया कि कल डायरेक्टर सर से मना कर दूँगी कि मैं नहीं कर सकती। किसी और को ले लें। ये सोचते हुए हमेशा की तरह सोने से पहले माँ की तस्वीर के आगे खड़े होकर कहा 'गुड नाइट माँ !'

माँ की तस्वीर थोड़ी धुँधली सी लगी। आँखें मली तो पानी था। तभी जैसे माँ की आवाज मन में गूँजी 'सुन अगर कभी कोई तुम्हें नीचे करने की कोशिश करे न तो समझ लेना ये इशारा है ऊपर वाले का कि तुम्हें उससे कहीं ऊंचा पहुंचना है।'

अगले दिन मैं अपनी टीम को उनके डायरेक्शन दे रही थी। विधि और उसकी बातें कहां थी मुझे ध्यान नहीं रहा। मगर मेरी डेस्क पर मेरी माँ की तस्वीर मुस्कुरा रही थी।

॥ ५ ॥

## Pavaan Vani



Dear Narayan Premiyo,

**Narayan Narayan**

The Narayan Shastras say, 'Every person who comes in your life is your well-wisher'. People often ask me- Didi, well-wishers behave well, then how can we consider the one who is behaving negatively with us as our well-wisher?

I think it is very easy, 'When someone is behaving negatively with you and you remember this sutra of Narayan Shastra that he is 'lightening my karma'. Then the mind starts filling with compassion, love and respect towards him. The mind remains calm and positive. But suppose you are not able to do this despite all efforts, then fill yourself with goodwill. Pray for yourself that you are full of goodwill and are behaving with everyone with goodwill i.e. kindness, love, compassion, respect. Do this until every cell of yours is filled with goodwill.

How will you come to know that you are filled with goodwill? When every person who comes into your life seems like a part of yourself, filled with love, when you have only love, respect and honour for every person, when you have compassion for every living being, this will definitely happen, I strongly believe this.

My wish and desire is to fill every cell of my body with goodwill and consider everyone as my well-wisher.

Rest all is good,

*R. modi*

॥ नारायण नारायण ॥

## CO-EDITOR

Deepti Shukla 09821327692

## EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562  
Mona Rauka 09821502064

### Main Office

Narayan Bhawan  
Topiwala Compound, station road,  
Goregaon (West), Mumbai.

### Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti  
Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

### Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI (NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	POOJA AGRAWAL	9326811588
GAUHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGRAWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGRAWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGRAWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGRAWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGRAWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAIPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
HUBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

### INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

## Editorial

Dear Readers,  
**Narayan Narayan**

Recently, I met an old acquaintance. The children wanted to know about him. My husband said, 'Consider him as our well-wisher, son'. But father, we are meeting him for the first time, so how did he become our well-wisher?' My husband told with a light smile, 'Son, this uncle lives in America now. But he has always wished well for us. When I used to live alone in a hostel in Mumbai, whenever I was sick, I would go to him, this uncle and aunty used to take care of me. When your mother came here after marriage, it was this aunty who introduced your mother to the world of Mumbai. He always remained with us in all our happiness and sorrow and encouraged us for our well-being. Today, even though they live far apart, our hearts are still close. Today you are seeing him for the first time because he has returned to the country after many years. But he knows everything about us and from time to time he keeps giving advice, blessings and prayers to me and your mother.'

Having said this, my husband became silent but unknowingly he gave a new topic to my mind, 'well-wisher'.

Let us become well-wishers and keep filling everyone's life with happiness. With these best wishes -

Yours own,  
**Sandhya Gupta**

### To get

important message and information from  
**NRSP Please Register yourself on 08369501979**  
Please Save this no. in your contact list so that you can  
get all official broadcast from NRSP

we are on net



[narayanreikisatsangparivar@narayanreiki](mailto:narayanreikisatsangparivar@narayanreiki)

<sup>e</sup> **Publisher Narayan Reiki Satsang Parivar,**  
**Printer - Shrirang Printers Pvt. Ltd., Mumbai.**  
Call : 022-67847777

|| Narayan Narayan ||



In Prakriti Geeta, Raj Didi tells that every person who comes in our life is our well-wisher because knowingly or unknowingly every person helps us in balancing our karmic account. Children, **well-wishers mean those people who wish for your well-being with a true heart and try to bring positivity in your life. Real well-wishers are those who support you in every situation, believe in your abilities, and motivate you. Such people do not envy your happiness but feel joy in your success. Well-wishers are identified by the fact that they appreciate your small and big successes and keep you away from negative thoughts.**

To become a well-wisher in your life, develop positivity in yourself, wish for the well-being of others, and inspire them with a true heart. Praising someone's good qualities and encouraging their abilities is the sign of a well-wisher. While trying to become your own well-wisher, keep in mind that you should help others sincerely, without any selfishness.

Well-wishers are nothing but the strength of our lives and the basis of our happiness.

People who often express their best wishes or sympathy towards someone, whom they are not even acquainted with, are known as well-wishers. Well-wishers are nothing but the strength of our lives and the basis of our happiness. Well-wishers are nothing but a personality of intelligence, morality, loyalty and legal characteristics of thoughts.

A true well-wisher is the one who talks about your weaknesses in front of you, and proudly talks about your strengths in front of others.

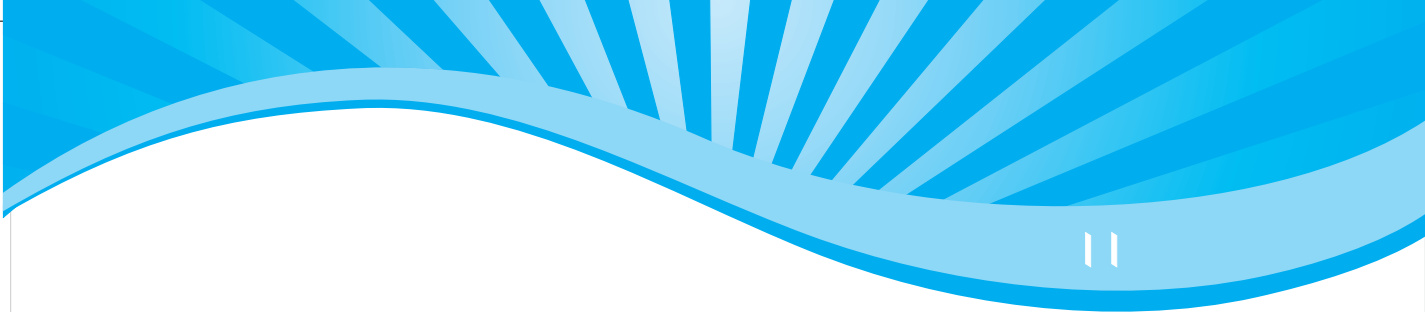
If those who are our well-wishers get angry for any reason, then they should be pacified immediately.

‘रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकार। टूटे से फिर न जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाए ॥’

(Rahim says, do not break the thread of love, do not join it again if it is broken, even if it is joined, a knot will form.)

Well-wishers are nothing but the strength of our lives and the basis of our happiness. If you calm the anger of well-wishers immediately, then things will not get worse. Starting the day with positive thoughts keeps the mind happy throughout the day.

A well-wisher is a person who wants your well-being all the time.



Anyone who loves you deeply, cares for you, thinks about your well-being is your well-wisher.

Parents are our true well-wishers. They want only our best in all aspects. Their love, concern and care are beyond our imagination.

Anyone other than parents can be your well-wisher. It can be your, friend, sibling, teacher, mentor or your Guru.

Their love and concern make you feel comfortable around them.

You can feel free to talk to them or share with them.

They will always guide you to what is best for you.

There is no hidden agenda. No jealousy. No other motive.

All the love and care they shower on you comes from selfless, pure love. A well-wisher is kind, peaceful, truthful, equanimous, blameless, generous, mild, clean, a minimalist, well-wisher of all, contented, devoted to Krishna, without craving, simple, steady, temperate, a balanced eater, sensible, well-mannered, without pride, serious, sympathetic, sociable, poetic, expert and silent. Well-wishers play a vital role in a person's life. They contribute to the well-being in many ways and give emotional support.

Truly blessed are those who have a well-wisher by their side.

By expressing care and concern, well-wishers provide emotional support that makes individuals feel valued, loved and understood.

Words of encouragement by well-wishers motivate people to overcome challenges and achieve their goals. The boost in self-confidence helps them stay determined.

Having people who genuinely wish you well can reduce stress and anxiety. It creates a sense of security and belonging that helps you cope with life's ups and downs.

Having well-wishers increases happiness and reduces loneliness by knowing that there are people who care about your happiness and success.

When it comes to the social circle, well-wishers are always there. These connections help to deal with isolation and live a more fulfilling life.

Achievements become even more special when someone else is congratulating



you for them. Well-wishers do this for us which increases their self-esteem and self-worth.

Well-wishers can be found in the community and support network. The good vibes can make it easier to get through tough times and make your life better.

Converting others to your well-wishers is an art that requires patience, understanding, and integrity. It is a skill that can be learned to achieve success and satisfaction in your personal and professional life. When people have positive feelings towards you, the doors of many opportunities and support open in your life. Here are some important steps that can help you in making others your well-wishers:

**Maintain honesty and trust.**

**Speak honestly:** When you speak honestly, people trust you. Express your thoughts and feelings correctly.

**Keep your promises:** If you promise something to someone, try your best to fulfill it. This makes people see you as a trustworthy person.

Exhibit empathy and understanding:

**Listen to others:** When you are talking to someone, listen to them carefully and try to understand them. This will make them feel that you care about them.

**Understand their situation:** Try to understand their situation, feelings and thoughts. Showing empathy makes people adopt a positive attitude towards you.

**Behave politely and respectfully:** By giving respect to people, they are attracted towards you. Do not discriminate against any person and respect them.

**Express gratitude:** Whenever someone helps you or does something good for you, thank them. This keeps the well-wishers close to you.

**Maintain positivity:** The magic of smile: A small smile can change a lot. A smiling face sends a message of positivity, which attracts people towards you.

**Encourage:** When people are around you, encourage them on their success and achievements. This makes them feel more positive towards you.

**Always be ready to help. Extend a helping hand:** If you can help someone, do not shy away from doing it. By helping others, people see you as a helpful person. Give support: Support people in fulfilling their goals and dreams. This will make them feel that you want their well-being.

**Give a balanced response to criticism:-** Give positive feedback: If you have to criticize someone, do it in a positive and constructive way so that the other person does not get hurt.

**Accept criticism yourself too:** If someone criticizes you, accept it with an open mind and try to improve yourself.

**Share good deeds and inspire:-** Inspire people with your good deeds. By presenting good examples in front of others, they start considering you as an ideal.

**Have a sharing spirit:** Whenever possible, share your resources and knowledge with others. This makes their thoughts about you positive.

**Take care of people's interests:-** Understand their needs: When you take care of someone's interests and needs, they feel special affection towards you.

**Cooperate:** Whenever someone needs your help, help them by taking care of their need.

Making others your well-wishers requires time and consistency. By following these steps, you can create a positive environment around you. Remember that mutual respect, empathy and honesty are the most important elements in every relationship. When people have a genuine positive feeling towards you, they not only become your well-wishers but also bring new energy and enthusiasm in your life.



॥ Narayan Narayan ॥

Thought for the day.

If someone is taunting you or talking to you loudly, and still you remain calm and silent, say Narayan bless him/her then you will stay in positive energy and will feel more peace and happiness. You will attract happiness, peace, health and prosperity in your life.

- Raj Didi

॥ ॐ ॥

## Wisdom Box (Glimpses of Satsang)

In this column of Wisdom Box we bring to the readers some pearls from the treasure of satsang. This time these pearls are to increase the prosperity of mind, body and wealth. Read and understand these and fill your life with prosperity:-

Raj Didi says that we should always use positive and appropriate words for money. The words we use for money, we get the same vibrations from the money. If you say there is prosperity in our house then there will definitely be prosperity, and abundance in your life. Raj Didi said that instead of using the word expenditure, we should use the word investment, by doing this we definitely get something in return.

Raj Didi further said that whoever you give money in your daily routine, even if you give it after bargaining, even then after giving the final amount, give that person 2, 5 or 10 rupees extra. Give it to him saying that keep it in your cashbox, Narayan will bless you. While making payment to anyone, if you get a 10 rupee note in return, then value that note and receive it with a smile. That 10 rupee note has so much power that it can pull 10 crore rupees to you. If the rickshaw wala meter is 46 rupees and you gave him a 50 rupees note, then welcome the four coins that you get in return in the same way as you welcome gold coins. Wherever you keep money in your house like purse, bag, drawer, locker, thank all these things regularly. Whenever you take out money, say that whenever I keep it here or take it out, I get blessings of progress and abundance in money. While giving money to anyone, give it with a smile, do not make a face. If you give money to someone with a face, then your negative vibrations go with that money and that note does not come back to you soon. For example, if you do not behave properly with the guest who comes to your house, then will he come back to your house. This same formula applies to money as well.

Raj Didi further said that money and mind are deeply connected to each other. Till date, everyone's mindset was that if there is money, the mind is happy, but Narayan Shastra claims that if the mind is happy, money will definitely come. A happy mind attracts money. Keep your mind happy, the happier your mind is, the more money you will attract. Special advice - one should never touch money in a state of anger and even if you have to touch it in an emergency, then keep chanting Ram Ram Mala in your mind, by doing this your negative vibrations will not reach the money. If you are travelling with someone and have to share the fare, then you do not pay money thinking that the other person will pay. There, in the process of saving 500, who knows how many thousands you will have to spend. Similarly, if you took out the money before the other person pays, but he made the payment before you, then it does not impact you because your intention was good. We should respect everyone's money, as much as we respect our own money, because we have to bring happiness, peace, health and prosperity in the house.

॥ नारायण नारायण ॥

Raj Didi further said that there is a very famous author named Mr. AL Koran who has written in his book “How to Attract Money” that how we can attract money. This is a very beautiful technique and has been tried and tested and it works. **When you give money to anyone, say this in your mind, “Narayan Narayan..!! I love you, I like you, I respect you, bless the place where you are going, do his work well and come back to me in multiples.”**

Raj Didi further said that this is a very beautiful technique to fill our life with happiness, peace, good health and prosperity. All the people in your house should sit together and do group prayers. You have to sit together and chant Sawamani, Ram Ram 108 + Ram Ram 21.

Raj Didi further said that Narayan Shastra says that the fruit you get from Raj Suya Yagya and Ashvamedha Yagya, the same fruit you get through group prayers.

### **Group Prayers**

If you want to do group prayers and your family members are not available, then you can start group prayers by keeping your Gurudev’s photo in front of you. One day it will happen that all the members of your family will sit together with you and start group prayers.

May Goddess Lakshmi’s hand be in our life, may Goddess Saraswati be with us, may Lord Ganesha reside there and may Narayan’s blessings be there!! May there be only light in all our lives, may there be only light, may there be only light!!

### **Energise ‘Tizoree/Locker’.**

Didi said wherever you keep your money, whether in Purse, in the wallet or in the wardrobe drawer, visualize that it is full of all currency notes. imagine that your drawer is has bundles of Rs500, Rs200, Rs100 Rs50, Rs20, Rs10 and Rs5 notes and a silver bowl full of coins. You have to converse with that drawer daily by touching it or in imagination, Say that “you are very good for me, very lucky. because of you I am living a life filled with happiness, peace, good health, prosperity. I Love You, I Like You, I Respect You. While talking to the money which you have kept in your drawers say, ‘if you go to someone fill their lives with happiness, peace, prosperity, and return to us in multiples with your family”. You have to do this prayer every day with love and respect. Then chant Ram-Ram 56. Raj Didi asked the satsangees to collectively energise the drawers and everyone

chanted Ram Ram 56.

### **Energizing Dining Table**

Raj Didi further energised the kitchen and dining table with the affirmations that whatever food and grains are kept in your kitchen or dining table are Narayan sanjeevani, By consuming these food items we are becoming physically and mentally healthy and





happy. Rajdidi said , if you have limited time , you can energise your money drawers and kitchen foods items together. Use your left hand energy for your money drawers and right hand to energise your food items. Raj Didi guided us for suryaprakash meditation.

### **Surya Prakash dhyan Meditation**

Didi said we have to visualize sunrays have entered our home and filled it with positive energy of. happiness, peace, good health, prosperity. Then chant Ram-Ram 21. Raj Didi further said that imagine your home is filled with positive energy of happiness, peace, good health, prosperity, Love, Respect, Faith, Care, progress, success, joy, enthusiasm.

### **Karmic Healing**

Raj Didi further explained about 'karmik Healing'. Didi said , take photo of your family members or imagine them on your Left hand say affirmation 'If we have hurt someone with our negative thoughts, words and behaviour, We seek forgiveness from them and we forgive those who have hurt us with their negative thoughts, words and behaviour. we have to pray for Everybody who have hurt us and for those whom we have hurt that their life be filled with joy, peace, good health, prosperity, progress, success, good name, Fame, Money, Love, Respect, Faith, Care and abundance, this intention is for the left hand energy. With right hand energy we have to bless those because of whom we are leading healthy happy seven star life .

We have to seek Narayan blessings for their good health, wealth ,Peace, prosperity, progress, success, happiness, joy, enthusiasm, Love, Respect, Faith, Care and divine energy . With Ram-Ram 21 x 7 times .

### **Sanjeevini Healing**

Raj Didi further explained about Sanjeevani healing. Raj Didi said that you can collectively do healing of many people together. We have to keep in mind that we sit in one place and do healing in the Child system. Visualize on your lap any special person you want to send Sanjeevani Energy, you want to see healthy. Then one by one imagine your near dear ones in front of you as many as you want 500 - 1000 people . Say affirmation they are calm and joyous healthy happy energetic. Do Ram Ram 21 on each chakra in Child System. Raj Didi expressed gratitude to Narayan for making us medium to heal so many people at one time .

Raj Didi further said that now we make a commitment with ourselves that we will follow the NRSP rules with full honesty and loyalty and then chant Ram-Ram 21.

### **Four Wheels Of Our life**

Raj Didi commenced the session with The Narayan prayer. She conveyed message of Mr. Ram Ratnam through Mr. Raghav. Mr. Raghav writes, we all want that we should be healthy in body , mind, wealth and relationships. These are the four priorities of our life. These are the four wheels of the cart of our life, when all these four are healthy then our life is happy and smooth.

### **Two types Of Energy**

Mr. Raghav further writes, there are two types of energy in this universe - Positive and Negative. Happiness, peace, Good health and prosperity, all these are the form of Positive energy, which we want in our life. We do not want sorrow, poverty, unrest, disease, grief, troubles and problems in our life, all these are present in this universe in the form of negative energy.

### **Right Use Of words**

Raghav says that we are taught from childhood what to speak, how to speak and when to speak .The things which we should not say and if we say it even jokingly, casually or seriously, then also that word shows its effect. By doing this, we unknowingly attract negative energy and our package of lifelong good health becomes unhealthy.

### **What we should Not Say**

1) Often we say that “No one listens to me.” Raghav says that leave alone speaking these words, we should not even mumble them and neither should we think about such things. This is like you have already declared that who listens to me, then who will listen to you..? This whole sentence is full of negativity which creates hurt within you. Hurt attracts negativity towards you and unknowingly, unintentionally you come in contact with this negative energy and your good package becomes unhealthy. Then this thought comes in your mind that why is my package unhealthy despite doing everything good..?? If you want everything to be healthy then you will have to change your negative sentence. You will have to give a positive statement like the mantra of Narayan Shastra. “Narayan, with your blessings every member of the house listens to me and also accepts my suggestions , Narayan thank you.” Just like you repeat Gayatri Mantra within yourself, you have to repeat this positive statement again and again. It should be recited at least 200 times a day. To whomever you want to convey your message, first you have to see whether that person is in the mood to listen to you, many times it happens that the other person is stressed. In such a situation, if you go and convey your message, then your message does not reach him. First you have to see this, then after that you will have to convey your message calmly. Then you will see the miracle in your life that how the person listens to you and also accepts your words.



॥ ॐ ॥

2. **You should never say that this life is very difficult, this work is very difficult.** As soon as you use the word difficult, you attract negativity, you get surrounded by troubles and problems. We want our life to be beautiful and safe, say that the life is very beautiful, safe. You will say this again and again and your life will keep on becoming beautiful. It may take some time, you have to have a little patience. The rule of the universe is like the piggy bank system . Till now you used to say that life is very difficult, so the negative stock is working, recently you have started saying that life is beautiful.so now when the negative stock is over, the positivity that you are putting in now ,will start showing affect in your life . After giving positive affirmations, you will feel that your life is really becoming beautiful. As soon as you see any work and say that this work is very difficult, it stops right there. You have to say that this work is very easy. As soon as you start saying this, nature itself will open easy paths for you.

3)“**I don’t feel like doing any work.**” Raghav writes that you should not use these words at all. If you say that I don’t feel like doing any work, then those words will create their own feeling inside you and will not let you do any work. It is a subtle thought in appearance, a small thought but it has a very deep impact. It comes at a special time, you are not able to do good work. For example, if you sit down to do meditation, then you will not feel like doing it and you leave it. You wish to start exercise and then do not do it because today you are not in the mood to do it. Start repeating the benefits of exercise - I will remain fit by doing exercise, my stamina will increase, my fitness will increase, my agility will increase, I have to do this to keep myself fit. If you start repeating the benefits of exercise again and again, then negative energy will go away from your life and miracles will start happening in your life.

4. **‘Always’ and ‘never’**. Both of these words have a lot of energy within them. They take the form in which you use them. For example, you said this, it has always been their nature to care for others, they never speak ill of anyone. You used these words in a positive way and its positive energy will reach the concerned person it will have a positive impact on him. People mostly use these words in a negative way. For example, it has always been his nature to come late, he can never improve, he was always like this. If we use these words in a negative way, then even if there is a change in the other person, we do not see it. Your intention is that by saying this we will improve the other person but this is not possible, always use it in a positive way and then see miracles in your life.

## Youth Desk

Goodwill means true feelings, feelings that are full of goodness, that increase love and trust.

There is no such button that once pressed and it is manifested.

To nurture it, first of all it is necessary to have a feeling of love for every living being.

When we see the form of Narayan in every person; means when we will understand that the life flowing inside him is the energy of the same God, by which this whole world is operated.

Only he for whom there is no one big or small, away from discrimination of caste, language and regions, can truly nurture goodwill.

Behave with everyone equally, whether they are your relatives or friends.

If our behavior is like this, then the plant of goodwill will get the right fertilizer and water.

By doing this, neither anyone will be dear to you nor unloved. You will give equal love, respect and honor to everyone.

It is necessary to have coherence in your speech and behavior. If you say something and do something else, then goodwill can never flourish. You must have heard these words from your elders -

Words and actions should be same

That is, the person who is same in thoughts, words and deeds is pure and he is the symbol of goodwill in true sense.

The growth of goodwill also depends on how honest and loyal we are in our relationships.

How strong is the feeling of compassion and sympathy towards all living beings in us, it nourishes goodwill.

Ill will and goodwill are like day and night. When you get rid of all ill will within you, goodwill will increase automatically.

Only when goodwill increases, the youth will be able to become entitled to a meaningful and seven star life in true sense.

Let us all take a pledge that we will nourish goodwill and will also introduce its importance to every person associated with us.

## Children's Desk

Imagine a world where every person sees the other as a well wisher. There is the expression of love respect, faith care in all relationships Where there is loyalty, morality, integrity and trust in each other and towards each other . Where Kindness is the norm. This promotes a culture of support and collaboration, making it easier for everyone to thrive. Whether it's a smile, a helping hand, or a genuine compliment, every small act counts and contributes to the collective good.

In this issue the Satyug team is elaborating upon the benefits of goodwill and how goodwill influences us to lead wholesome lives.

How to enhance good will?

For that we have to understand what is good will is?

The definition of Goodwill is a friendly or helpful attitude towards other people, countries, or organizations.

When we maintain our attitude as being helpful to all, giving an ear to all they too get obligated to give their best.

Read a beautiful story of a family from North India. Both parents were working. One fine day in the fire, they lost everything. Not only they, but 50 other families, who lived in the same premises lost their homes and belongings. They were moved to a Govt shelter. Her parents were devastated that all that they had valued, all they had accumulated for their daughters wedding was in ashes.

But her father still was a brave man. He believed in divine energy. It is when you lose everything that your true character is revealed.

True character is like a diamond, hidden in the coal mine .He had had to start from zero. **“All you need is, three things- Will (To do something), Good will (of fellow men) and God's will.”**

The very next day he went to the sikh temple and then to his place of work.

Somehow, my father's simple faith gave me strength. He had lost everything but still had the will to get his life in order again.

Because of his goodwill he was helped by his colleagues to restart his business, which consequently thrived.

My mother also went back to school. There also they found help and yes they lived through.

Three things always work for you

Your will to work, Good will from your fellow men and yes God's will.

So like NRSP and Rajdidi prophesizes-**Always consider that every person who is associated with you is your well wisher.**

## Under The Guidance of Rajdidi

For the last long time, in this column, we have been sending the confessions of those satsangis to the readers, who made the confession in the Brahma Muhurta, followed the suggestions given by Didi and attained the Sapt-star life. Our aim is only one that the readers should read it, understand it and correct their mistakes: -

### **Confession of a male Satsangi**

I could not maintain balance in my married life, I could not give my wife and children their due time and respect. I always kept my and my parents' wishes above everything else, due to this I had to live separately from my wife and children for three years, please get me forgiveness at Narayan Bhawan.

### **Took pride in property**

I had become very proud of my property and my husband. My husband took over the property of another brother and built a factory and shop on it and rented it out, 40 thousand rupees were coming from it. My husband has now gone to Narayan Dham, the property has also been sold. We ate from the right of others, today the property is stuck from all sides. Please get me forgiveness.

### **I was arrogant, hurt everyone with my thoughts, words and behaviour**

#### **Confession of a male Satsangi**

I hurt my first wife a lot. I brought up one of her mistakes in front of everyone in my and her family and scolded her so much that she did Narayan Narayan. After her death, I lied to everyone that she was in a blissful state. Result - My second wife's condition became blissful, I kept taking her from one doctor to another, to another doctor, to another Peer, Pandit, Maulvi and kept showing her to them. My personal life remained disturbed. When I came to know about my father's immoral relationship, I even raised my hand on him, I used to beat up the workers in the factory when they made mistakes. I have also beaten my brother-in-law a lot. Result - I have got a frozen shoulder on my right side and it hurts a lot. I got a share of the property after fighting, Result - Money did not last, blessings did not increase. If someone made a mistake, I would not forgive him until he held my feet and apologized. I misbehaved with many people with my words. I used to buy stolen goods in the factory, the result was that thefts started happening in the factory. If someone gave me more money by mistake in business, I would keep it myself, I would not tell them. Result - there was no blessing, liabilities kept increasing. Car, bungalow, everything was lost. When times were good, instead of accepting Narayan's grace, I became arrogant. I have been connected to you for 6 months, I am improving myself by listening to sharing. Today I am 60





years old and have realized my mistakes now. I seek forgiveness at Narayan Bhawan.

#### **Theft, results of discussion**

Someone's ring had fallen down, so instead of returning it to them, I kept that ring with me. Result - My gold chain which was four times more expensive, and five thousand rupees cash was stolen.

My children were very intelligent in studies, I discussed that my children study very well and my sister-in-law's children are of no use. Result - Now my sister-in-law's and sister-in-law's children are doing very well and my children are Narayan's help.

Everyone from my maternal home used to come and go, but my sister-in-law's used to not come. I used to discuss it a lot, used to be proud. Result - Now no one comes from my parent's home.

#### **Result of wrong thoughts**

15 years ago my father-in-law had asthma, he used to have phlegm and he used to sit with a mug, so a thought came to my mind. Now I too have asthma. I apologize.

#### **The result of goodwill**

The male satsangi said that yesterday for the first time in so many years I did not get angry the whole day and spoke sweetly and softly. Yesterday there was an order for a party, there was some confusion due to their mistake, they scolded me a lot, but I did not reply back to them and explained to them with love. People who met me also said that very good changes are taking place in me. Didi, I salute you with respect for showing me the right path.

Narayana blessings for a seven-star life filled with happiness,  
peace, health, prosperity, progress, success and  
perfect health to Ayodhya Malpani.

Narayana blessings for a seven-star life filled with happiness, peace,  
health, prosperity, progress, success and perfect health to Sushma  
Taparia and Banwari Lal Taparia on their wedding anniversary  
(30th November).

# Inspirational Memoirs

॥ ॐ ॥

## Unknown Well-Wisher

One small girl was sitting on the floor of her small house and crying. After going through so much, this was the first time she felt lonely. Little Amara had lost both her parents at a very young age and her elder sister was everything for her. They went through all the hardships together and were there for each other all the time. Despite being very poor, they managed to keep each other happy. Amara's sister never let her feel the lack of her parents. But now the dreaded Corona virus has gripped her sister as well. How will she live now, when there was no one with her?

Just then there was a knock on the door. Amara didn't bother to answer it at first. But when she heard the knock again she got up, wiped her eyes and opened the door. There was a man standing in front of her. He was not too tall, not too short. Not too fat, not too thin. He had a kind smile on his face. His smile widened when he saw the little girl.

"Hello. I am a traveler. I missed my bus. So a man told me I would find another transport nearby. But I believe I am lost. I have been wandering for hours and am very tired and hungry. I hope you can please give me something to eat?" the man said.

Amara's sister had taught her to always help people, no matter what the situation. So, Amara let the man in and gave him something thing to eat. The man noticed this, and asked "Little miss, if you are going to give me everything. Then what would you like to eat?"

"I am not hungry" Amara said sadly. The man knew that something was bothering the girl, so he asked her what was wrong. Now, Amara was just a little girl, and, all she wanted to do right now was share her pain with someone. So, when the man asked her, she burst into tears and told the man everything. The man understood her pain and went to her and hugged her. The man was a complete stranger to Amara, but the hug still felt comforting. They stayed like that for a while, when Amara said, "How will I live now? My sister was the one who worked for money and brought food to our plates. I don't know how to do this." "It's okay... I'm here. I'll give you some money until you find a job and are stable enough. I think I'll stay here for a few more days to take care of you until you feel better. If that's okay with you" the man said. "Of course. That would be great" Amara replied.

A few days passed... To distract her, the man bought some books and started teaching Amara at home. She was a smart girl, just lacking in means. She still cried for her sister sometimes, but the man told her that it was perfectly normal, and time would heal this wound too. Meanwhile, the man's wallet was running out of money. And soon they would have nothing left. So, he started looking for a job for Amara.

One day, he said to Amara during breakfast, "I have found a job for you Amara, now you can earn money on your own, just like your sister did, you will start tomorrow". Little Amara

॥ नारायण नारायण ॥



was happy, “Oh! This is wonderful! Now I can earn money on my own!”. But she did not notice the sadness in the man’s voice. He knew that what he was going to do next would hurt her deeply, but he had no other choice.

“Good night Amara” said the man

“Good night!” said Amara. And with that both of them fell into a deep sleep.

The next morning when Amara woke up, she saw that the man was not in bed or in the house. His belongings were also nowhere to be seen. She ran out of the house, in case he was roaming around, but she could not find him anywhere. She asked some other man who was around. “He left early in the morning. Caught the 6 o’clock bus” the man replied. Amara was filled with emotions. Sad, because now, again, she had no one. And angry, because he hadn’t told her he was leaving. She rushed to his house and started crying.

Then she saw a note on his bed, for some reason she had ignored it before. Now, Amara had learned to read, so she read the note out loud:-

**Dear Amara,**

I know you will be angry with me. But I could not tell you about my plans. Otherwise you would never let me go. And let me tell you that it was a very difficult decision for me too. But, as I told you, I am a traveller. And a traveller does not stay at one place for long. I have arranged a tuition teacher for you in the village, she has agreed to teach you for free and will come to your house every day at 5 pm. Please, promise me, that you will never stop studying, and will grow up to be a very big and intelligent woman. Then you can help other children like you too. Or make some great discovery in astrology.... Please, forgive me for leaving you like this, but there are many other children who need my help. And remember? You asked me my name one day, and I replied that I have no name. Well, I have just given myself a name. Consider me a well-wisher.

## Well-wisher’s advice

My friend and I used to take the same bus every morning. Since our house was in the developing part of the city, bus services were irregular and chaotic. We were grateful to our polite bus driver because he would wait for us on mornings when we were running late. Even as we crossed a vacant plot passing over brambles to catch the bus, his wry smile and ‘careful’ made us feel like an elder brother looking after his younger siblings. Soon we outgrew our grade, outgrew our uniforms. The vacant land disappeared and houses sprung up, yet the bus service remained the same. The frequency may have increased, but it was

॥नारायण नारायण॥

the same bus and the same driver who took us to school every day.

We noticed that this driver was different from other drivers and conductors. He wore a neatly ironed uniform and sporty shoes instead of slippers. Also, he was soft-spoken and politely requested standing passengers to give way. His way of dealing with Hyderabad's notorious eve-teasers was also very matter-of-fact and generally left no room for any argument.

Gradually, he started enquiring about our classes and grades. We exaggerated our marks! During exams, we not only caught the bus in the morning but also scheduled our return journey before his shift ended. His interest in our academic performance was a novelty, given that we, the convent educated ones, believed that only less educated people became bus drivers and conductors. It was considered a lowly profession by us school kids, who missed the drivers' grueling shifts, the weather and the difficulty of dealing with loud passengers.

Finally, the day arrived when we were in the last year of our school life. Class 10 was considered a milestone and we were reminded of it from every side. After 10th we entered intermediate college.

We were pretty much past the most torturous phase of one's life. We were quite happy to be moving along and besides the advice was off our backs when we were just fifteen years old.

It was close to our finals. We had gone to collect our preparation marks from school and were coming back in the neighbourhood bus when the driver asked us about our performance. We were bewildered. Our results were not good enough to share—even if he was a driver! He smiled and said in flawless English, "Both my father and brother are managers. I tried to cheat in the 10th boards and the flying squad caught me red-handed. I was banned for six years and now I am a bus driver. Never cheat but try to do your best." Before we could collect our thoughts, he added, "Opportunities should not be misused!" Much to our embarrassment.

## Parents are true well wishers

This was not my first job. Before this I used to handle operations of projects in small NGOs. Which used to fulfill most of my college needs. But my mother thought this was my first because it was a well established company. And it was my mother who forced me to fill the form for it. One night before the interview, my mother called me near her and said, "Listen, if someone tries to bring you down, then understand that it is a sign from the Almighty that you have to reach much higher than that." The next day my mother's health deteriorated. She was admitted to the hospital. But no one in the family even allowed me to

stay there. Mother's wish was that I should get a stable job somewhere in a good place. I should go for the interview. I got the job but my mother was lost forever. I had gone into deep sadness. But no one realized this, not even me.

In the company too, I was appointed in the same department in which I had been working for many years. Slowly, I was started feeling happy. Everything was good but a feeling of emptiness had set in. There were a lot of enthusiastic people in the office. They had a group which was always lively. Their noise and commotion would sometimes draw my attention towards them. And then, I would often see a gaze in the group looking at me. This was Vidhi. Experienced, cheerful and a little short-tempered.

One day the company's director came for inspection. It happened suddenly. All my work was done. There was no backlog. Vidhi was late that day for some reason. Her team member Shikha came running to me. "Please make some excuse to keep Sir with you, Vidhi did not come and I cannot see her project file either." I said, "Ok, I will try."

That day Vidhi was late by one and a half hours. Maybe her luck was good or mine, director sir kept showing interest in my file and project for a long time and said to me "You are an asset to this company." Anyway, he left by afternoon. It was lunch time, Shikha told Vidhi that today she was saved because of me. So she came to me in the canteen and thanked me very politely. Her politeness surprised me all of a sudden. Her eyes were shining and there was a smile on her face. I said "it's ok, mention not."

After this, I started saying "Hi-Bye" to Vidhi every day. One day I came to know that Vidhi and her team have been shifted to my department. Vidhi and I used to sit face to face now. I was passionate about completing my work but Vidhi thought that my working so engrossedly was a waste.

One day she came to my desk and said laughingly, "What benefit do you get, on the contrary they load more work on you. Do only as much as you get paid, Madam." I smiled at her. "Okay, then bear it, we are leaving Madam." Saying this she left.

A few days later, on my mother's death anniversary, I was sitting in the canteen and looking at my tiffin. This tiffin was the same in which my mother used to pack lunch for me. I did not realize when tears started flowing from my eyes. The sound of pulling a chair diverted my attention. I saw Vidhi sitting in front of me. "What happened Madam?" she just asked and I started sobbing. She started listening to me. I was telling her, "This job, I don't know what to make of it. I went to get it but my mother lost it." "You yourself are saying that it was mother's wish, so consider it mother's blessing." It was not that this was the first time Vidhi had explained this to me. Everyone in the family had been telling me the same thing. But Vidhi's direct communication had an impact. I was relieved of my sadness. I started feeling a little lighter. Now she would talk to me often. I also started becoming normal again.

Whenever I was upset with office politics, she would raise my morale. She would tell me that all this is normal. It happens. Learn to stand up for yourself, etc. Sometimes she would need help and I would do it without being asked. This continued. A kind of trust started building up. Now we would do every project together. She would tell me about her experiences and I would listen and suggest improvements and she would implement them. She did many such great projects. She would say that I am more of her friend than her best colleague. I also started feeling that I have a well-wisher in this office.

A year passed. On Foundation Day, a meeting was called in the conference hall. Vidhi was on leave. Director Sir took my name for a big national project and asked me to select my team and give names. Everyone was surprised that she had just joined a year ago and was being given such a big responsibility. I also got nervous. Vidhi was suitable for this project. I proposed her name without thinking. But the director sir said that we need fresh and raw talent. Her talent will be considered in some other project. I was disappointed and also very nervous that what will happen if the project does not run properly. Vidhi did not come for the next two days. I called to ask about her well being. She was out on a long road trip with her friends. I told her about the project, "This is the advantage of being beautiful madam!!!!" Vidhi said, "I have heard that day your director sir sat with you for one and a half hours." I was speechless after hearing this. Is Vidhi speaking or someone else? "Anyway, Jawani jab tak kaam aaye, good luck heroine" saying this she disconnected the phone. But I could still see two Vidhis. One lovingly consoling me and the other pouring molten glass in my ears. Who was this other one?!

There were rumours in the office too. And this was no different. The words spoken by Vidhi were reaching my ears through different sources. I started feeling very uneasy that why are people saying such disgusting things?!!!

I came home and started convincing myself, started talking to myself "They all know especially Vidhi that I have done such projects before. This one has just gone from the state to the national level."

I kept arguing with myself for a long time. People are talking nonsense about me just because of this project, right?! Then I thought that tomorrow I will refuse to the director sir that I cannot do it. He should take someone else. Thinking this, as usual, before going to sleep, I stood in front of mother's picture and said "Good night mother!"

Mother's picture seemed a little blurry. When I rubbed my eyes, there were tears. Just then my mother's voice echoed in my mind "Listen, if someone ever tries to bring you down, then understand that this is a sign from the Almighty that you have to reach much higher than that."

The next day I was giving directions to my team. I was no longer affected by Vidhi and her words. In my eyes it was only mother's smiling picture boosting my morale .



# GOLDEN SIX

**1) Prayer** -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

**2) Energize Vaults** - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

**3) Shanti Kalash Meditation** – Visualize a Shanti Kalash ( Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

**4) Value Addition** - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

**5) Energize Dining Table/ Office table** - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

**6) Sun Rays Meditation** - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

# Finest Pure Veg Hotels & Resorts



**Our Hotels :** Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

**THE BYKE HOSPITALITY LIMITED**

Shree Shakambhari Corporate Park, Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com